अंक 3 व 4

1997

चैतन्य लहरी

" आज के दिन हमारे करने योग्य एक ही कार्य है कि हम अपने अन्तर्निहित असुरों का वध करें, बस। आप यदि वास्तव में मेरी पूजा करना चाहते हैं तो आपको यह सोचना होगा कि आपके अन्दर कौन से असुर हैं। मात्र इतना ही। बाह्य असुरों की चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं, वे आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते" ।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
नवरात्रि पूजा, 1996

VISHWA NIRMALA DHARMA
UNIVERSAL PURE RELIGION

चैतन्य लहरी

विषय सूची

खण्ड IX , अंक 3 व 4, 1997

1) शिवरात्रि पूजा, दिल्ली – 16.3.97.................. 3

2) जन्मदिवस पूजा, दिल्ली – 21.3.97.............. 8

3) श्री गणेश पूजा, कबेला – 15.9.96............... 17

4) हॉलैण्ड के विषय में श्री माताजी के विचार...... 23

5) सिडनी वायुपत्तन वार्ता – 5.3.96...................... 25

6) नवरात्रि पूजा, कबेला – 20.10.96.................... 27

7) श्री माताजी को शांति पुरस्कार........................ 37

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस प्रकाशन का कोई भी अंश, प्रकाशक की अनुमति लिए बिना, किसी भी रूप में अथवा किसी भी जरिये से कहीं उद्धृत अथवा सम्प्रेषित न किया जाए। जो भी व्यक्ति इस प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करेगा उसके विरुद्ध दंडात्मक अभियोजन तथा क्षतिपूर्ति के लिए दीवानी दावा दायर किया जा सकता है।

प्रकाशक :
निर्मल ट्रान्सफॉर्मेशन प्राइवेट लिमिटेड,
8, चंद्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
कोथरुड, पौढ़ रोड, पुणे 411038
'ई' मेल का पता–
marketing@nirmalinfosys.com
वेबसाइट: www.nirmalinfosys.com
Tel. 9120 25286537. Fax. 9120 25286722

शिवरात्रि पूजा

3

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

दिल्ली, 16 मार्च 1997

(मूल–हिन्दी प्रवचन)

आज हम लोग शिवजी की पूजा करने जा रहे हैं। शिवजी के स्वरूप में एक स्वयं साक्षात सदाशिव हैं और उनका प्रतिबिम्ब शिव स्वरुप है। ये शिव का स्वरूप हमारे ह्रदय में हर समय आत्मस्वरूप बन कर स्थित है। ये मैं नहीं कहूँगी कि प्रकाशित है। जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो ये शिव का स्वरूप प्रकाशित होता है और वो प्रकाशित होता है हमारी नसों में। चैतन्य के लिए कहा है 'मेदेस्थित', प्रथम 'इसका प्रकाश हमारे मस्तिष्क में, पहली मर्तबा हमारे ह्रदय का और हमारे मस्तिष्क का योग घटित होता है। नहीं तो सर्वसाधारण तरह से मनुष्य की बुद्धि एक तरफ और उसका मन दूसरी तरफ दौड़ता है। योग घटित हो जाने से जो प्रकाश हमारे अन्दर आत्मा से प्रगटित होता है वो चैतन्य स्वरूप बन कर हमारे हाथों और तालू से प्रवाहित होता है। ये तो आप लोग जानते हैं; पर आगे की बात समझने की यह है कि जब यह प्रकाश हमारे अन्दर आता है तो धीरे–धीरे हम देखते हैं कि हमारी जिन्दगी बदलने लगती है, हमारे अन्दर का क्रोध और हमारे जो षटरिपु हैं वो खत्म होने लगते हैं। धीरे–धीरे सब चीजें गिरती जाती हैं और मन में श्रद्धा प्रस्थापित होती है। श्रद्धा में त्यागबुद्धि जागृत होती है, किसी भी चीज़ का महत्व नहीं रह जाता।

अब शंकर जी की जो हमने एक आकृति देखी है, एक अवधूत, पहुँचे हुए, एक बहुत कोई औलिया हो, उस तरह के हैं। उनको किसी चीज़ की सुध–बुध नहीं, बाल बिखरे हुए हैं, जटा जूट बने हुए हैं। कुछ नहीं, तो बदन में कौन से कपड़े पहने हुए हैं, क्या कहें, इसका कोई विचार नहीं। ये सब काम उन्होंने नारायण को, विष्णु को दे दिया है। वे स्वयं मुक्त हैं। व्याघ्र का चर्म पहन कर घूमते हैं और उनकी सवारी भी नन्दी की है जो किसी तरह से पकड़ में नहीं आ सकते। कोई घोड़े जैसा नहीं कि उसमें कोई लगाम हो, जहाँ नन्दी महाराज जायें वहाँ शिवजी चले जाएं। उनको किसी चीज़ में कभी ये ख्याल नहीं आता कि लोग क्या कहेंगे, दूसरों का क्या विचार होगा ? हम अगर ऐसे कपड़े पहनकर और नन्दी पर बैठकर इधर–उधर भटकें तो लोग हमें क्या कहेंगे ? क्योंकि वो अपने ही अन्दर समाये हुए हैं। अपने ही खुशियों में बैठे हुए हैं। उनको कोई भी संसार से ये मतलब नहीं है कि दुनिया हमें क्या कहेगी, लोक–लाज क्या होती है। ये तो इनके विवाह में भी आपने वर्णन सुना होगा कि जब ये विवाह करने आए तो श्री विष्णु ने जब देखा तो उन्होंने सोचा कि ये क्या दूल्हा मेरी बहन

के लिए आया है, बेकार सा! इससे कैसे मेरी बहन शादी करेगी ? लेकिन पार्वती जी जानती थीं कि उनके योग्य यही पति है जो एक मस्त–मौला आदमी है। किसी चीज़ की उनको कद्र नहीं है। सब चीज़ों से जब आदमी ऊपर उठ जाता है तो उसके लिए सब चीज़ एक किन्चित पदार्थ हो जाती हैं। उसका ध्यान इस ओर नहीं जाता।

ये शिवजी का जो अवतार हम लोग देखते हैं हमें बहुत प्यारा लगता है, मोहक लगता है और सब लोग सोचते हैं कि शिवजी का सारा ही काम कुछ तो भी विशेष है। लेकिन जब सहजयोगियों में शिवजी का प्रकाश आ जाता है तो उनका भी जीवन बदलने लगता है। मैंने देखा है कि जैसे पहले सहजयोग में आए, औरतें भी, आदमी भी, सब सजना–धजना शुरु कर देते थे। सारा ध्यान इसी में रहता था कि आज क्या पहनें, कल क्या पहनें, और आजकल तो इसका प्रादुर्भाव बहुत हो गया है क्योंकि सब जगह बहुत सारे सौन्दर्य प्रसाधन गृह निकल आए हैं, ये है, वो है, तो औरतें इसमें बहुत फँसी हैं। पर जब आपके अन्दर से निखार, आपके सौन्दर्य का, इस प्रकाश से आता है तब इन सब चीज़ों का कोई महत्व नहीं रह जाता। उसी तरह आराम, आराम भी एक तरह से आत्मा का ही आराम मनुष्य खोजता है। अपने आराम से दूर रहता है। इसमें जो परदेशी लोग हैं, इनको देखिए, ये बड़े–बड़े घरों में रहते हैं, इनके पास मोटरे हैं सबकुछ, रईस हैं। पर यहाँ आते हैं तो हर जगह समा जाते हैं। पर हिन्दुस्तानियों का ये हाल नहीं है। हिन्दुस्तानी अब भी जहाँ जाते हैं उनको बाथरूम चाहिए साथ जुड़ा हुआ। पता नहीं और दुनिया भर की चीज़ें। अभी तक इससे उठ नहीं पाए हैं। स्वभावतः मुझे आश्चर्य होता है कि अपने गरीब देश में भी लोगों में अभी काफी कामनाएं बची हैं। बड़े आश्चर्य की बात है! हमें लोगों ने कहा कि माँ एक आश्रम के लिए एक बड़ी सी जगह ले लें। हमारे हिन्दुस्तानी कभी आश्रम में रहते नहीं। अब ये आश्रम जब हम लोगों ने बनाया, इतनी मेहनत से, खर्च करके तो इसमें रहने के लिए कोई तैयार नहीं। हमने कहा बाबा हम तुमको तनख्वाह देते हैं, तुम रहो। पर तैयार नहीं। मेरा जो जन्मस्थान है, छिन्दवाड़े में, उस घर के लिए इतना रुपया–पैसा खर्चा किया और मैंने कहा जो रिटायर हो गए हैं वहाँ रहें। बड़ी अच्छी आबो–हवा है, पहाड़ी स्थान है। कोई रहने को तैयार नहीं। सब अपने आराम को सोचते हैं। इन लोगों में यह बात नहीं है। वे लोग आश्रमों में बड़े सुख से रहते हैं। मेरा घर, मेरी जगह, मेरी बीवी, खाना बनना चाहिए इस तरह से ये यही खाना खाएंगे। हम लोग इतने स्वाद में उलझे हुए हैं। इन लोगों में ये स्थिति नहीं है। हिन्दुस्तानी खाना भी शौक से खाते हैं। लेकिन मुझे मालूम है कि जब हिन्दुस्तानी कबेला आते हैं तो अपनी रोटियाँ, परांठे–वराँठे, अचार–वचार बाँध के लाते हैं क्योंकि उनके जीभ से नहीं उतरेगा। सभी तो जीभ में ही फँसा हुआ है। सो ध्यान करने से जब तक ये चीज़ें छूटेंगी नहीं तो आप धर्म से परे नहीं जा सकते। एक छोटी सी बात समझने की है

कि त्याग में भी हम लोग कम पड़ जाते हैं। इस बार इन्होंने कहा कि माँ आप इतनी बड़ी जमीन ले रहे हैं, इतना खर्चा कर रहे हैं, तो पूजा के लिए थोड़ा सा ज्यादा पैसा कर दो। न जाने कितनी चिट्ठियाँ मेरे पास आईं कि आप पूजा का पैसा कम कर दीजिए, पूजा का पैसा कम कर दीजिए। अरे भई एक बार दिल्ली में पूजा हो रही है उसमें भी चिट्ठियों पर चिट्ठियाँ। पान खाकर लोग फेंक देंगे लेकिन पूजा में जरूरी है पैसा देना! आपसे पहले हमने कोई पैसा नहीं लिया। सारी चीज़ें अपने ही दम पर सब करी। लेकिन इतना सा कहते ही आज आधा मण्डप खाली है। क्यों ? क्योंकि पूजा का पैसा नहीं देना। फोन करते हैं कि हमारी पूजा माफ कर दीजिए। अरे भई आप कोई कम नौकरी हो ऐसा नहीं है। हमारे पति देंगे मैं नहीं दूंगी। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। अभी अगर कोई औघड़ गुरु होते तो आप लोगों के सबके बाल मुंडा कर और आपको गेरुआ वस्त्र पहनाकर सर के बल खड़ा कर देते। लेकिन मैं यह नहीं चाहती, क्योंकि सहज की बात है। सब चीज़ सहज में आना चाहिए। हमने बहुत लोगों को त्याग करते अपने जीवन में देखा है। और आजकल लोगों में मैंने वो देखा ही नहीं। हमारी माँ का मुझे मालूम है कि छःसाड़ियों से सातवीं साड़ी उनके पास हो जाए तो दे डालती थीं। वहाँ भी लोग आते हैं कबेला में तो आश्चर्य होता है कि उन्हें अलग से कमरा चाहिए, घर चाहिए, अलग से रहेंगे। सबके साथ नहीं रहेगें। **जो सब के साथ मिलकर रह नहीं सकता वह सहजयोगी नहीं है।** वो अभी भी सोचता है कि मैं कोई विशेष हूँ, मेरा अलग सब इंतजाम होना चाहिए। वो सहजयोगी नहीं हो सकता। वो नाम मात्र को सहजयोगी हैं। जो शंकर जी का भक्त है उसको शंकर जी जैसा होना है। कहीं भी सुला दो, कहीं भी बैठा दो, कुछ भी खाने को दो, उसको किसी चीज़ से कोई मतलब नहीं है। समय की पाबन्दी नहीं, किसी चीज़ की माँग नहीं; ऐसा ही आदमी, हम कह सकते हैं, सहजयोगी है।

शिवजी का आपके अन्दर प्रादुर्भाव हो गया। लोग तो इसको प्राप्त करने से पहले ही न जाने क्या–क्या कर्म करते हैं। और किसी पद्धति में आप जाइए वो आपके सारे पैसे नोच लेंगे, आपके सारे बाल नोच लेंगे, पता नहीं क्या–क्या करेंगे। सहजयोग में ऐसा नहीं है। लेकिन ये वृत्ति, जो अब भी हमारे अन्दर बनी हुई है, इसको छोड़ना चाहिए। यह प्रयत्न करना चाहिए कि हम क्या–क्या चीज़ छोड़ सकते हैं। जब तक ये मस्ती आपके अन्दर नहीं आएगी तब तक आपको शिवजी का भक्त नहीं कह सकते। माता जी के तो हर तरह के भक्त हैं। उसकी कोई विशेषता तो है नहीं। सब तरह के भक्त हैं, चाहे जो भी करें, चलो माँ ही है, माँ माफ कर देती हैं। पर माफ कर देने से आप उस पद को प्राप्त नहीं कर सकते। माफ करने की बात सबसे बड़ी यह है कि शिवजी से हर समय माफी माँगनी चाहिए, हर समय क्षमा माँगनी चाहिए, क्योंकि पग–पग हम ऐसे काम करते हैं जो हमें नहीं करना

चाहिए। उनसे क्षमा माँगनी चाहिए कि, हे शम्भो हमें क्षमा कर दें। हम ये गलती करते हैं, हम वो गलती करते हैं, हमारे अन्दर ये जरूरतें हैं, हमारे अन्दर वो जरूरते हैं, हमको ये चाहिए, हमको वो चाहिए। जब तक चाहिए, अपने अन्दर हैं, तब तक आप परमात्मा से क्षमा माँगे। मेरा घर, मेरी बीवी, इस तरह एक अधिकार की भावना, जो हमारे अन्दर है, इसको जब हम छोड़ नहीं सकते तो हम शिवजी के भक्त नहीं हो सकते। इस मामले में आश्चर्य की बात है कि परदेश के लोगों ने तो इतना पा लिया, जिन्होंने कभी सुना भी न था शिवजी का नाम और हम लोग अभी भी उसी में चिपके हुए हैं, और उसी को इतना मानते हैं।

शिव होने का मतलब यह है कि सर्वथा दुनिया भर की जो हमारे अन्दर लोलुपता है, जो हमारे अन्दर नफरत है, जो हमारे अन्दर दुष्टता है उसको छोड़ देना है। पर मनुष्य सहजयोग में आने पर भी अपने को देख नहीं पाता। मैंने सुना एक सास हैं जो अपनी बहू को सता रही हैं। मैंने कहा तुम क्यों सता रही हो तो वो कहने लगी मैंने तो सताया ही नहीं। सिनेमा में जाएंगे, देखेंगे कोई सास बहू को सता रही है तो रोएंगे, वही और घर में आकर बहू को सताएंगे या बहू सास को सताएगी। लेकिन कहेंगे कि मैंने कभी किसी को सताया ही नहीं। इस तरह के झूठ को अपने आवरण में रखकर सहजयोग में आप उठ नहीं सकते। क्योंकि ये आप की जिन्दगी बदल देता है, इससे तो आपका सोना हो गया और सोने पर तो कोई कलंक लग ही नहीं सकता, उसपे कोई चीज चढ़ ही नहीं सकती। वो अब आप हो गए हैं, उस स्थिति को प्राप्त करें। अब भी क्यों ये गुलामी दुनिया भर की चीज़ों की ? यही कुण्डलिनी की विशेषता है कि यह आपको पूरी तरह से सफाई में डाल देती है। सेवा, हाँ भई सेवा भी करनी चाहिए, पर मुझे तो कोई सेवा खास आपकी चाहिए नहीं। मैं खुद ही मस्त–मौला हूँ मुझे आप क्या सेवा देंगे? सिर्फ ये है कि आप अपने अन्दर ये मस्त–मौलापन ले आइए। एक आनन्द में विभोर रहने पर ये सोचना चाहिए कि यह सब चीज़ें कुछ तो आनन्द ही के लिए हैं और वो आनन्द हमको अगर मिलता ही है बगैर कुछ किए तो ये सब करने की क्या जरूरत है ?

बहुत कुछ सोचने पर मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि **सहज जो है वो है तो बहुत सरल और इसलिए बहुत कठिन है।** अगर कोई डण्डा लेकर खड़ा हो और कहे कि चलो सब बाल मुंडाओ, गेरुए वस्त्र पहनो, 14 दिन तक भूख हड़ताल, तो हो गया। उसमें ठीक हो जाते हैं। पर जो सहज है उसको अपने हृदय से, अपने मन से, अपनी बुद्धि से स्वीकार्य करके और उसमें अपनी ही ताड़ना करना, अपने को ही ठीक करना, मैं ऐसे क्यों करता हूँ ? ऐसा मुझे करना चाहिए क्या ? इसमें बहुत कुछ छूट जाएगा और इससे एक तरह से आप अपने को पाइएगा कि आप समर्थ हैं।

आपको कोई चीज़ की गरज नहीं, आपको कोई चीज़ की इच्छा नहीं, बस बैठे हैं आराम से। और आश्चर्य की बात है कि जब चैतन्य यह जानता है कि आपको कोई चीज़ की गरज नहीं तो आपके सामने थाली परोस कर लाता है। हो सकता है प्रलोभन के लिए हो। फिर देखिएगा आपको क्या है। **कोई आपकी जरूरत ऐसी है ही नहीं जो पूरी नहीं कर सकता।** पर इसमें थोड़ी सी लगन होनी चाहिए।

आज शिवजी का हम लोगों ने इतना आह्वान किया और उनको तो ऐसे लोग अच्छे लगते हैं। उनमें हममें यही फर्क है कि हमें सब तरह के लोग अच्छे लगते हैं उनको नहीं। उनको ऐसे ही लोग अच्छे लगते हैं जिन्होंने ये सब छोड़ दिया। ये सब व्याधियाँ हैं हमारे अन्दर। एक–एक चीज़ में कि भई कपड़े ऐसे पहने, नहीं पहने तो क्या हो जाएगा ? लेकिन हमारे यहाँ सन्यास बाह्य का नहीं माना जाता, अन्दर से; अन्दर से आप सन्यस्थ हो जाएंगे और सन्यस्थ होने पर कोई भी चीज़ की कामना नहीं रह जाती। जहाँ है वहीं मस्त बैठे हैं। पहले नाथ लोग थे, वे भ्रमण करते थे, दुनिया भर में जाते थे। और उन्होंने बहुत कुछ लोगों को शिक्षा दी। मैं तो हैरान हुई कि ये लोग कहाँ–कहाँ पहुँचे थे। कोलम्बिया में गई थी तो वहाँ पता हुआ कि बोलीविया में ये लोग आए थे। अब कोलम्बिया में अगर आप जाएं तो हवाई जहाज में चक्कर आने लगते हैं, इतना ऊंचा है। और उस वक्त तो सब पैदल ही लोग जाते होंगे! तो ये गए कैसे होंगे ये ही समझ में नहीं आता ? रूस में, रूस के और भी देशों में इनका भ्रमण हुआ, और कैसे करते थे, कहाँ रहते थे, क्या पहनते थे, कुछ पता नहीं। क्योंकि वो दशा आ जाती है फिर आप एक चमत्कार पूर्ण इन्सान हो जाते हैं। जैसा हम जानते हैं कि शिरडी के साईनाथ, कहीं भी उद्‌भव होता है उनका, वे कहीं भी आते है। कहीं भी किसी की मदद कर देते हैं। लोग कहते हैं माँ हमने तो उनको देखा, हाँ देख सकते हैं, क्यों नहीं ? ऐसे लोग अमर हो जाते हैं क्योंकि उनकी मारने वाली जो वृत्तियाँ हैं खत्म हो गईं। फिर वो अमर हो जाते हैं और इसी अमरत्व को प्राप्त करना ही शिवजी की पूजा है।

8

जन्मदिवस पूजा

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

दिल्ली 21 मार्च 1997

(मूल हिन्दी प्रवचन)

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

जब सब दुनिया सोती है तब एक सहजयोगी जागता है और जब सब दुनिया जागती है तो सहजयोगी सोता है। इसका मतलब ये होता है कि जिन चीज़ों की तरफ सहजयोगियों का रुख है उस तरफ और लोगों का रुख नहीं। उनका रुख और चीज़ों में है। किसी न किसी तरह से वो सत्य से विमुख हैं, मानें किसी को पैसे का चक्कर, किसी को सत्ता का चक्कर, न जाने कैसे–कैसे चक्कर में इंसान घूमता रहता है और भूला–भटका, सत्य से परे, उसकी ओर उसकी नज़र नहीं है। कोई कहेगा कि इसका कारण ये है, उसका कारण ये है कोई न कोई विश्लेषण कर सकता है। पर मैं सोचती हूँ अज्ञान, अज्ञान में मनुष्य न जाने क्या–क्या करता है। एक तरह का अंधकार, घना अंधकार, छा जाता है। जैसे अभी यहाँ अगर अंधकार हो जाए तो न जाने भगदड़ मच जाए, कुछ लोग उठकर भागना शुरु कर दें, कितने लोगों को गिरा दें, उनके ऊपर पाँव रख दें, उन्हें चोट लग जाए। कुछ भी हो सकता है। इस अंधकार में हम लोग जब रहते हैं तब हमारी निद्रा अवस्था है। लेकिन हम जब जागृत हो गए, जब कुण्डलिनी का जागरण हो गया और जब आप सत्य के सामने खड़े हो जाते हैं तो सत्य की महिमा का वर्णन कोई नहीं कर सकता। मैंने पूछा किसी से भई सहज में तुम्हें क्या मिला? बोले माँ ये नहीं बता सकते पर सब कुछ मिल गया। सब कुछ माने क्या? मैं भी कहूँगी कि आज के दिन मुझे सहज में सब कुछ मिल गया है। मैं जब छोटी थी तो अपने पिता से कहती थी कि मैं चाहती हूँ कि जैसे आकाश में तारे हैं ऐसे दुनिया में अनेक लोग तारे जैसे चमकें और परमात्मा का प्रकाश फैलाएं। कहने लगे हो सकता है। तुम सामूहिक चेतना जागृत करने की व्यवस्था करो और कुछ भाषण मत दो, कुछ लिखो नहीं, नहीं तो दूसरा बाईबल तैयार हो जाएगा, कुरान तैयार हो जाएगा और एक झगड़े की चीज़ शुरु हो जाएगी। सो इससे पहले तुम सामूहिक चेतना करो और सामूहिक चेतना का कार्य शुरु हो गया, अनायास, सहज में! लेकिन उसकी जो समस्याएं हैं वो मुझे आपसे आज बतानी हैं।

बहुत आनन्द की चीज़ है कि सामूहिक चेतना हो गई और सब जगह लोग इतने ज्यादा मात्रा में, हर देश में, लोग सत्य को पा गए और उसमें ही आनन्द में हैं। लेकिन कष्ट तब होता है, ये सोच करके, कि सामूहिक चेतना में हमने कोई चयन नहीं किया; दरवाजा खोल दिया हर तरह से

लोग अन्दर आ गए और अपने साथ अपनी गन्दगी भी लेकर अन्दर चले आए। और जब ऐसे थोड़े से भी लोग आ जाते हैं तो वो बहुत नुकसान देते हैं। नामदेव वगैरह तो बिल्कुल जो पहले बड़े साधु–सन्त हो गए, जो अपने ही लोग हैं, उन्होंने तो साफ–साफ कह दिया था कि जो कि बुरे हैं वो अच्छे हो ही नहीं सकते; उनकी आदतें ठीक हो ही नहीं सकतीं। उदाहरण के लिए उन्होंने कहा एक मक्खी लीजिए; मक्खी एक तो आपके खाने पर बैठेगी तो भी मार डालेगी और अगर कहीं मर गई और पेट में चली गई तो भी आप मर जाएंगे। ये मक्खी नहीं ठीक हो सकती। उन्होंने कहा कि ऐसे मक्खी वाले बहुत से लोग बहुत सा उनको **गुड़ चिपकाने का शौक होता है** और उसकी ओर दौड़ते ही रहते हैं। सो सहज में ये चीज़ें सब हमारी गिर जानी चाहिएं। जब तक ये गिरती नहीं तब तक हम ऊँचे उठ नहीं सकते। पंखो में अगर कोई चीज़ लग जाए तो पक्षी भी नहीं उड़ पाते। इसलिए जो ये आनन्द का आकाश है जिसे कि कवियों ने रागांचल कहा है–माँ के प्यार का आंचल– इसमें आप एक पक्षी की तरह उड़ नहीं सकते, क्योंकि आपके पंखों में भी कुछ न कुछ अभी लगा हुआ है।

आज का दिन शुभ दिन है और बहुत से लोग सोचते हैं कि बहुत बड़ा दिन है और इस दिन कोई विशेष कार्य हुआ; ऐसे लोगों ने कहा हुआ है। लेकिन आज के दिन एक विशेष कार्य आप लोगों को करना है। इतने सारे आपने गुब्बारे लगा रखे हैं, इससे इंसान खुश हो जाता है देखता है कि देखो रबड़ में भी कितनी शक्ति है कि वो हमें सुख और आनन्द दे सकता है, और वो भी एक बड़ी सौन्दर्यपूर्ण वस्तु बन सकता है। फिर हम तो मनुष्य हैं और मनुष्य में हम आज सहजयोगी हैं, पहुँचे हुए लोग हैं। सो इन लोगों की एक स्थिति आने के लिए क्या करना चाहिए ?

अभी मेरा एक अनुभव हुआ जो मैं आपको एक कथा के रूप में बताती हूँ। मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं इसलिए ये सब हिन्दी में बोल रही हूँ क्योंकि ये ज्यादातर दोष हिन्दुस्तानियों में हैं। अंग्रेजों में इतना नहीं, परदेश में भी इतना नहीं। उन लोगों को इस की अक्ल भी कम है। हमारे देश में पहले ये हमारी भारत माता, पूरी सम्पूर्ण, इसमें अनेक तरह के देश समाए हुए थे। आप जानते हैं इसमें बर्मा था, सीलोन था, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि अनेक देश समाए हुए थे। ये हमारी माँ है 'भारत माता'। पर इसको लोगों ने काट–पीट लिया। किसलिए काटा–पीटा ? वो ऐसी बात हो जाती है कि जैसे कोई लोग इस देश में ऐसे हो गए जिन्होंने सोचा कि ये हमारे देश के लीडर हो गए, ये बड़े आदमी हो गए तो हम क्यों न कुछ ऐसा करें कि हम भी बड़े हो जाएं। ये अगर प्रधानमन्त्री हो सकते हैं तो हम भी प्रधानमन्त्री हो सकते हैं। ईर्ष्या, पहली चीज, ईर्ष्या हो गई कि हमारा एक देश हो जाए , हम अगर विभाजन कर लें तो उतना हिस्सा हमको मिल जाएगा। उस पर हम राज–पाट करेंगे। जैसे बहुत से बड़े–बड़े परिवारों में ऐसा होता है कि

लोग चाहते हैं हमारा अलग घर हो, हम अलग से रहें, हमारे बीवी–बच्चे हों, हम वहीं रहें और किसी से मतलब न रखें। तो विभाजन करने की एक प्रवृत्ति मनुष्य में है। और उसी के कारण, समझ लीजिए आप, बांग्लादेश बना तो मैं अभिभूत हो गई कि लोगों ने इतना सा बांगला देश माँगा! और इसलिए कि कुछ लोग चाहते थे कि हमारा राज्य हो। आप इस्लाम का नाम लो या किसी भी धर्म के नाम पर कोई न कोई बहाने से विभाजन कर डाला और आज बांग्लादेश का ये हाल है कि हमें लोग कहते हैं माँ आप मत जाओ नहीं तो आप की आँखों से अविरल अश्रु धारा बहती रहेगी इतनी दुर्दशा है। पाकिस्तान का क्या हाल है ? सीलोन जिसको कि अब श्री लंका कहते हैं उसका क्या हाल है? ये जो तोड़–तोड़कर देश के इन्होंने अलग भाग बनाए और सोचा कि अब इसमें हम राज करेंगे, अधिकतर उनके प्रधानमन्त्री वगैरह को वहीं के लोगों ने मार डाला। उनका खून कर डाला। सो ईर्ष्या से ईर्ष्या बढ़ती है और फिर इसी तरह के समूह बन जाते हैं और फिर लड़ते हैं कि यह तो हमें चाहिए। अभी भी अपने यहाँ बहुत चला हुआ है विभाजन का विचार। जैसे हमारे यहाँ कहीं विदर्भ है तो कहीं झारखण्ड है। ये बनाने से क्या मिलेगा ? किसको क्या मिला है विभाजन से? सहजयोग इसके बिल्कुल विरोध में है कि हम किसी चीज़ का विभाजन करें। हमको तो सबको जोड़ना है (synthesis) सहजयोग सारा समन्वय पर चलता है और अगर आपको समन्वय की कोई कल्पना नहीं है तो आप सहजयोग छोड़ जाएं वही अच्छा है।

अभी एक बहुत भारी वारदात हो गई कि एक साहब सहजयोग में थे दो सबके भूत निकालते थे। मैंने कहा बन्द कीजिए, ये भूत आपको पकड़ेंगे। पर उनको शौक हो गया। हो सकता है लोग उनको पैसा देते हों या बहुत बड़ा आदमी कहते हों, जो भी हो। जो भी हो उन्होंने अपना एक अलग ग्रुप निकाल लिया। सहजयोग के भी कुछ ऐसे लोग थे वो भी अलग हो गए। एक अलग ग्रुप बनाकर उन्होंने एक अलग से संस्था निकाली। हाँ मेरे बारे में उनको कहते शंका नहीं थी, लेकिन और जो लोग हैं और लीडर जो हैं, किसी काम के नहीं। कुछ उसके दोष, कुछ उसके दोष, कुछ सबके दोष निकाल कर उन्होंने कहा कि हम बड़े शुद्ध आचरण के लीडर हैं, और हम माँ के भक्त हैं। मुझसे बिना पूछे, मुझसे इजाज़त लिए बिना, उन्होंने एक बड़ा ग्रुप बना लिया। मेरे फोटो खूब दिखाये दुनिया भर को। पता नहीं क्या धन्धा करते थे, मुझे तो पता ही नहीं कि क्या हो रहा था। और लीडरों को ये लीडर अच्छा नहीं वो लीडर अच्छा नहीं। अगर कोई खराब हो तो मैं खुद जान जाऊंगी। जब मुझे मानते हैं तो मुझ पर छोड़ देना चाहिए। मुझे तय कर लेने दीजिए कि लीडर अच्छा है या नहीं। लेकिन लीडर को तुम ऐसे हो, तुमने ये क्यों किया, तुम ऐसे क्यों करते हो? इसका अधिकार आपको नहीं है। अब कोई कहेगा लीडर क्यों है सहजयोग में। इसलिए है कि मेरा सम्बन्ध सबके साथ नहीं हो सकता,

अगर बीच में एक इंसान रहे तो उसके माध्यम से मैं सबसे सम्बन्धित हो सकती हूँ। तो वो लीडर पर नाराज हो गए, ये लीडर ठीक नहीं, ये ऐसा है वैसा नहीं। उसका जो दोष हो, उसकी जो तकलीफ हो, उसको मुझे निकालना चाहिए न कि आपको। अगर आपको तकलीफ है तो आप मुझे लिखो। पर आप. अगर ऐसे आदमी से कहें कि अच्छा अब आपको लीडर पसन्द नहीं है तो आप सहजयोग छोड़ दो, तो उसके साथ और ऐसे दस अधकचरे सहजयोगी जुट जाएंगे और फिर उस लीडर के लिए ये काम करने लगेंगे। इसी तरह का एक बन गया। उसमें 70–80 लोग इस तरह के इकट्ठे हो गए जिनकी मैंने कभी शक्ल नहीं देखी, जिनका कभी नाम नहीं सुना, मैं जानती नहीं कि ये सहजयोगी हैं। अब उन महाशय ने कह दिया कि मैं तो कल्कि का अवतार हूँ। चलो भई हो, मुझे कुछ नहीं कहना। हो जाओ और तुम सहज से हटो, बस, सहज में आपका कोई स्थान नहीं। इन लोगों ने उनको मान लिया कि ये कल्कि का अवतार है। उसी के ये लोग चरण छूने लगे थे, चरण छू महाराज, पैसा छू महाराज! सब तरह के महाराज होते हैं तभी ये बने। तो पैसे लिए इनसे। ये लोग जो दोष अपने लीडरों में दिखा रहे थे वही दोष उनके अन्दर थे। बहुत अच्छे से उनका प्रादुर्भाव हुआ और सब देखने लग गए कि ये क्या हैं ? तो इस तरह की ईर्ष्या और महत्वाकांक्षा हो जाती है। लेकिन बेवकूफ जितने भी सहजयोगी थे छन कर उसमें चले गए। बड़ी कमाल की चीज़ है क्योंकि अन्तिम निर्णय (Last Judgement) है न। तो छन–छनकर ऐसे लोग इकट्ठे हो गए और लीडर का चरित्र अच्छा नहीं तो फलाना अच्छा नहीं, तो वो पैसा खाता है, ये है वो है। सी बी आई से बढ़कर। मैंने कहा भई हद हो गई, मुझसे पूछो तो मेरा प्रमाणपत्र (Certificate) तो लो। लेकिन हम माँ आपको तो मानते हैं लेकिन मैं जो कर रही हूँ उसको नहीं मानते। करते–करते ये बेवकूफ लोग गणपति पुले पहुँचे वहाँ इन्होंने मेरे ऊपर पत्थर फेंके, क्योंकि जब दुर्बुद्धि हो जाती है जब बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो आपको होश ही नहीं रहती कि आप बोल क्या रहे हैं कर क्या रहे है, जैसे शराबी आदमी हो जाता है उस तरह की हालत हो जाती है। और वहाँ पर उन्होंने हंगामा मचा दिया। प्रोग्राम में आ गए। मैंने देखा इतने खराब उनकी चैतन्य लहरियाँ (Vibrations), मैंने कहा बाप रे बाप ये सहजयोग में बैठने वाले हैं ? अपनी चैतन्य लहरियाँ ठीक करने की जगह दूसरों के चैतन्य लहरियाँ ठीक कर रहे हैं। **तो ऐसे जो लोग सहज में लोग हैं उनको सहज छोड़ ही देना चाहिए** क्योंकि सहज वो हैं नहीं। लेकिन अगर एक–आध माई का लाल खड़ा हो गया तो उसकी दुम पकड़कर बहुत से लोग सोचते हैं कि वो स्वर्ग में चले जाएंगे। कैसे ?

सहज एक सामूहिक कार्य है, एक सामूहिक संस्था। इसमें किसी का नाक उधर, तो आँख उधर, किसी का हाथ उधर। तो ये चलने ही नहीं वाला क्योंकि चैतन्य को ये बात पसन्द नहीं है। फिर मैंने

कहा कि तुम बगावत कर रहे हो, तो कहने लगे आप हमें गाली दे रहे हैं। मैंने कहा नहीं मैं आपका वर्णन कर रही हूँ कि आप चैतन्य से बगावत मत करो। इसीलिए वहाँ भूकम्प आ गया और अब आगे क्या होगा एक माँ की दृष्टि से मैंने कहा कि भई देखो सत्य और परमात्मा जो है वो कोई तुमको क्षमा नहीं करेंगे, मैं तो माँ हूँ मेरी बात दूसरी है। वो तुमको नहीं छोड़ेंगे, तुम मेहरबानी करके सब धन्धे छोड़ कर दो। लेकिन लागी नाहीं छूटे वही बात है। उसी चक्कर में वो फँसे हैं।

आजकल मैंने सुना है देहरादून में बड़े जोरों में ये काम हो रहा है। उधर झारखण्ड चल रहा है, इधर एक भूतखण्ड भी चल रहा है। अब अगर सहजयोग से इन दो–चार बदमाश लोगों को निकाल दिया जाए तो उनके साथ जुटने वाले भी बहुत से लोग हैं। और एक दूसरा ग्रुप बना लेंगे। पर उस ग्रुप के लिए मुझे हर्ज़ नहीं। कृपया चले जाएं और गंगा जी में डूब जाएं, मुझे उसमें कोई हर्ज नहीं। पर वो सहज में नहीं रह सकते और मेरा नाम नहीं ले सकते, मेरा फोटो नहीं लगा सकते। आज ये बात बड़ी दुखदाई लगी जब मैंने सुना कि जिस आदमी पर मेरा इतना विश्वास, जिसने इतना कार्य किया, उसी से कहने लगे, तुम ये मोटर कहाँ से ले आए? अरे भई वो काम करते हैं, धन्धा करते हैं, ये मुझे पूछना चाहिए और तुमको अगर कोई ऐसी ख़ास शिकायत हो तो मुझे चिट्ठी लिखो। आज मुझे कहना नहीं था पर और कोई मौका नहीं था तो इस शुभ अवसर पर मुझे अशुभ बात कहनी पड़ी है। इस तरह के अगर धन्धे करने हैं तो अभी आप सहज से अपना आसन लेकर तशरीफ बाहर ले जाइये। उसमें मुझे कोई हर्ज नहीं। सहजयोग में किसी पर जबरदस्ती नहीं है, आप जानते हैं। मैंने तो कभी अपने घरवालों पर भी जबरदस्ती नहीं की कि तुम सहज करो। हालांकि मैं जानती हूँ कि इससे बढ़कर और कोई चीज़ नहीं है पर मैंने उनसे भी कभी नहीं कहा कि तुम सहज करो। करना हो तो करो नहीं तो मत करो, पर ऐसे धन्धे नहीं करना। इसका मतलब है आप कभी भी सहजयोगी नहीं हो सकते। एक तरह से सहज की दृष्टि से अपने लीडर से इस तरह से बर्ताव करना महापाप है और उसको लेकर ग्रुप बनाना तो उससे भी महापाप है। अगर आप लोग चाहें तो आप मुझे चिट्ठी लिखें मैं उस पर खबर करूंगी। मुझे तो चैतन्य (Vibrations) पर फौरन पता चल जाता है कि वाकई में आप सच हैं कि वो और दुनिया भर की चीज़ें उसमें लिखते हैं। चिट्ठी भी आती है तो उसमें इतनी बकवास कि मैं उधर ध्यान ही नहीं देती। वो लीडर ऐसा है, वो लीडर ऐसा है। अरे आप कौन बड़े शुद्ध आत्मा हैं ? आप अपने को तो देख लीजिए। देखना चाहिए। जब आप ही नहीं ठीक हैं तो आगे का क्या होगा? आपके बच्चे हैं और बच्चों के अलावा जो आपके आस–पास पड़ोसी आदि सब लोग रहते हैं, तो वो क्या सोचेंगे अगर आपका लीडर ऐसा है ? तो क्या सोचेंगे आपके लिए भी ? आप क्यों पीछे लगे हो ? आपकी माताजी को अक्ल नहीं है, वो ऐसे लीडरों को

चुनती हैं। इसी तरह की चीज़ें शुरु हो जाती हैं और सहजयोग खत्म हो जाता है। अभी तक तो कहीं इस तरह से खत्म नहीं हुआ। कोशिश हमने पूरी की थी कि डूबते हुओं को बचा ही लो। किसी तरह से बच जाएं तो अच्छा ही है। जितने सहजयोगी हों अच्छा है। मुझे ये भी लगता है कि सत्य पर बसा हुआ ये जो स्वर्ग है, स्वर्ग के जाने के लिए भी थोड़ी सी तैयारियाँ जरूरी हैं। और नहीं तो दूसरी बात ऐसी भी है कि वहाँ भी जगह कुछ कम होगी। तो नियति भी ऐसा कार्य कर रही है कि चलो ये फालतू लोगों की काट–छाँट करो। लेकिन इस चक्कर में आपको आना नहीं चाहिए।

अगर आप वाकई जागृत हों तो अपने प्रति जागृत हों, दूसरों के प्रति नहीं। अपने प्रति जागृत होकर देखो कि हमारे अन्दर कौन सी कमी है। किसी को कोई चक्कर, किसी को पैसा कमाने का चक्कर है। अब सहजयोग में पैसा कमाने लोग आते हैं। अगर उनसे कहें कि भई आप यहाँ पैसा कमाने के लिए नहीं आए हैं तो ये बात उनकी खोपड़ी में नहीं घुसती। पैसे का चक्कर भी आज मुझे कहना पड़ेगा कि कुछ लोगों में कुछ अक्ल ही कम है। पहले ईसा ने कहा था कि 'पहला अन्तिम होगा और अन्तिम पहला' (First will be the last and last will be the first) ऐसा कोई दिखता नहीं है। जो शुरु–शुरु में सहजयोगी हमारे बम्बई में आए थे तो वो कहने लगे माँ कम से कम हमसे एक–एक हजार रुपए ले लो। मैंने कहा देखो बेटे मुझे न तो पैसा गिनना आता है न ही मुझे रखना आता है, न ही मैं बैंक जानती हूँ। तो अपना अगर कोई बन जाए, जिसको कहना चाहिए, ट्रस्ट या कोई चीज, तब मैं फिर तुम लोगों से रुपए ले लूंगी। इसलिए नहीं कि मुझे बड़ी ईमानदार बनना चाहिए, मुझे अक्ल ही नहीं है बेईमानी की, तो फिर किया क्या जाए ? मुझे अगर गिनना ही नहीं आता पैसा तो मैं क्या करूं ? मुझे तो बैंक का चैक भी लिखना नहीं आता। वो तो छोड़ो हम बने ही कुछ और तरह से हैं। पर आप लोगो को ये सब आते हुए भी आप जानते हैं कि धर्म के नाम पर कोई अगर पैसा लेता है तो वह पछताएगा। पैसे का चक्कर बड़ा जबरदस्त है। तो इस बार हमने सोचा था कि बहुत बार हमने आपसे कहा भी, कि यहाँ की जो औरतें रास्ते में भीख माँगती हैं, बहुत सी मुसलमान औरतों को उनके पतियों ने छोड़ दिया है, वो रास्ते पर बच्चों को लेकर भीख माँगती हैं, और कहाँ–कहाँ से बाहर से, राजस्थान से, बिहार से औरतें यहाँ आई हुई हैं, इनका कुछ न कुछ भला करना चाहिए। इसलिए हमने एक संस्था बनाई है उसके लिए हमें पैसों की आपसे कोई जरूरत नहीं। हमने कभी किसी से भी पैसे के लिए नहीं कहा। हमारा इंतजाम हो जाता है। लेकिन मैंने सोचा कि आपको भी कुछ पुण्य मिले। तो मैंने कहा पाँच सौ रुपए रख दो, एक सौ आठ के बजाए। हो गया चिट्ठियों पर चिट्ठियाँ 108 का 500 कर दिया। अरे साल भर में आप को एक बार गर पैसा देना पड़े, कुछ पुण्य करने का ही नहीं क्या ? सिर्फ लेने का है? फिर लक्ष्मी तत्व आपमें कैसे दिखाई

देगा ? लक्ष्मी तत्व में तो सिर्फ देना ही होता है। उस पाँच सौ के लिए लोग इतने पगला गए। पाँच सौ रुपए तो आप बाल कटाने के देते हैं नाई का कभी–कभी। ऐसी आफत मचा दी कि 500 रुपए ? मैं समझ गई कि लोग अभी अधकचरे हैं। पहले जमाने में इतनी बात नहीं थी। श्रद्धा और त्याग, और त्याग की भावना ही नहीं आती थी, मज़ा आता था। तो ये जो बात है हमारे अन्दर, अब भी हमारा चित्त वो पैसे पर है, हम तो 108 ही देंगे नहीं तो हम आएंगे ही नहीं। मत आओ, बड़ा अच्छा है। निकल ही जाओ सदा के लिए। वो अच्छा है। क्योंकि सहजयोग भिखारियों के लिए नहीं है। पहले आप लोग ठीक हो जाइए फिर भिखारियों की मदद करिए। हम भिखारियों की मदद करते हैं। उसके लिए अगर कहा गया कि थोड़े से पैसे दे दीजिए तो आप लोग इतने क्यों नाराज़ हो रहे हैं ? मैं तो, आप जानते ही हैं पैसे को छूती भी नहीं। मेरे को मालूम ही नहीं है। लेकिन एक कार्य निकाला है, उसके लिए अगर कहा गया कि 108 के बजाय 500 दे दीजिए तो आप सारे लीडरों पर बिगड़ गए। सब पर बिगड़ गए और मार आफत मचा दी। माँ ये आपको किसने सलाह दी ? अरे मुझे मशवरा देने वाला अभी पैदा ही नहीं हुआ। मैं तो अपने ही दिमाग से चलती हूँ। ये समझ लेना चाहिए। ऊपर से मैं भोली–भाली लगती हूँ, लेकिन अन्दर से मैं बहुत चन्ट हूँ। इसलिए मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश नहीं करना। अगर आप लोगों से जरा सा भी नहीं होता है सहजयोग के लिए देना, सालों बीत गए, हजारों लोगों को ठीक किया। इतने तो आप लोगों को बख्शीश में पैसे दिए, क्या क्या किया। सब कुछ किया। आप जानते हैं। पर इतनी सी चीज़ के लिए लोगों की नजर बदल गई। मुझे बड़ा दुःख लगा इस बात पर। पहले भी ऐसे ही होते रहा है। कितनी क्षुद्रता है। अब बम्बई में इस बार सबने कहा कि माँ आप यहीं पूजा कर लो, तो मैंने कहा भई पिछली मर्तबा का अनुभव बड़ा खराब हैं, जो पूजा हुई उसमें से एक चौथाई लोगों ने खाने के पैसे दिए, बाकी मैने दिए पैसे! पूजा मेरी हुई और खाने के पैसे भी मैने दिए! बम्बई के लोग तो खास हैं। हमारे महाराष्ट्र के ऐसे कंजूस लोग हैं, वो ब्राह्मणों को देंगे, सिद्धि विनायक को देंगे, पर यहाँ मुफ्त में खाने को आ गए। एक चौथाई लोगों ने खाने का दिया, एक तिहाई ने पूजा का दिया। ग्यारह (11) रुपए और सहजयोग में आ गए। इससे अच्छा कटोरा लेकर कहीं मस्जिद के सामने बैठ जाएं, वो ज्यादा अच्छा है। वहीं कुछ अल्लाह उनका भला करे तो करे। ऐसे ऐसे लोग सहजयोग में हैं और इसलिए मुझे कहने का है कि आपसे मुझे किसी प्रकार का दान या पैसे की आज तक जरूरत नहीं पड़ी लेकिन मैंने कहा कि, जरा देखें, @ testing करके, उस testing में मैं हैरान हो गई और कोई भी ऐसा गरीब नहीं है इसमें जो 500 भी नहीं दे सकता। फिर ये कहा गया, जो नहीं दे सकता नहीं दे, तो फोन पर फोन आ रहे हैं कि साहब मेरा नाम आप काट दीजिए। मैं नहीं दे सकती क्योंकि मेरे पति कमा रहे हैं। कितना कमाते

हैं ? सात हजार (7000) कमाते हैं पर मैं नहीं दे सकती। मेरे पति दे देंगे। पर अपनी तरफ से मैं नहीं दे सकती। जरा कुछ सेल (Sale) निकाल दीजिए, वो होता है ना marketing कुछ sale हो जाए तो अच्छा है। किस किस को माफ करें। अरे भई कितना पैसा आने वाला है उससे क्या हमारा (NGO) (गैर सरकारी धर्मार्थ संस्था) चलने वाला है ? कुछ भी नहीं। पर आप लोगों की परीक्षा हो गई। आप लोग कितने गहरे पानी में हैं ?

पैसे के अन्दर से पहले चित्त निकालना हिन्दुस्तान के आदमी के लिए बहुत जरूरी है, अगर वो सहजयोग में है, नहीं तो आजकल जेल भरो आन्दोलन चला ही हुआ है। पैसों में काहे को आपका इतना चित्त है ? आपकी लक्ष्मी जी हमने जागृत कर दी। जितना आप दोगे, उतना ही आपको मिलेगा। देना इतने आनन्द की चीज़ है जिसकी कोई हद नहीं। आप लोग मुझे कुछ देते हैं तो मैं तो इसलिए सिर्फ लेती हूँ कि आप लोग खुश होते हैं। मुझे किसी चीज़ की जरूरत नहीं। मेरे घर में कोई जगह नहीं है। मेरे घर कुछ रखने की जगह नहीं है। मैं कुछ नहीं कर सकती। पर आप मुझे देते हैं प्यार से और आप उससे खुश होते हैं। लड़ाई–झगड़ा करके मैं हार गई कि मुझे आप साड़ी मत दो, मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे जेवर नहीं दो। मैंने यहाँ तक कह दिया मैं सब जेवर बेचने वाली हूँ। उसी से सारे काम हो जाएंगे। तो कहने लगे माँ आपको जो करना है करो, पर हम तो देंगे ही। ये आप की खुशी के लिए हम लेते हैं। हमें क्या लेना और क्या देना ? कुछ लिया ही नहीं तो देना क्या ? लेकिन ये एक चीज़ हमारे अन्दर हिन्दुस्तानियों को समझनी चाहिए। हमने तो ऐसे लोग देखे हैं कि आपको आश्चर्य होगा, सिर्फ स्वतन्त्रता कमाने के लिए हमारे ही पिताजी के घर से सारी जमीन जायदाद सब बेच दिया। माँ ने हमारे सब जेवर बेच दिए, सब जेल में गए। मुझे तो बिजली के झटके लगाए गए और बर्फ पर लिटाया। मुझे कुछ नहीं होता था। सब मजाक था लेकिन तो भी सब तरह की चीज़ें लोगों ने सहन की। दो–दो–तीन–तीन साल जेल में रहे और अब जेल में जा रहे हैं इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन इस वजह से कि पैसे खाए हैं। वो कहेंगे हम भी जेल में गए। जिन लोगों ने सहजयोग में बहुत बदतमीजी करी है उनका हम छुटकारा करने वाले हैं, पक्की बात है। खबरदार किसी लीडर के खिलाफ किसी ने भी अगर आवाज उठाई तो उसको हम सहजयोग से छुट्टी कर देंगे। पूरी तरह से जान लें, इसमें शक नहीं है क्योंकि हमे तोड़ना नही हैं। आपका स्वार्थ है, आपका मतलब है, आपको और कोई धन्धा नहीं है तो पुलिस में भर्ती हो जाओ, C.I.D. बन जाओ। कुछ भी करो। सहज में क्यों आप आए। सहज के लायक ही नहीं हैं आप। आप आए कैसे सहज में?

आज के दिन ये सारी बातें करने की मैंने बड़ी धृष्टता की और मैं जब सो गई थी तभी मेरे मन में ये ख्याल आया कि आज क्या कहा जाएगा। 74 साल की उम्र का बूढ़ा क्या कहे। बुढ़ढे लोगों

का एक ही काम होता है कि अपने बच्चों को नसीहत दें। उनको भी कहें कि जिन्दगी क्या है और आप किसलिए सहज में हैं। सहज में आप अपना सर्वनाश करने के लिए नहीं आए क्योंकि सहज की अति सांकरी गली (Very Narrow Street) कही जाएगी। इस तरह की है, अगर आपको आना है तो ये पता रखना चाहिए कि आप को इस सांकरी गली से चलना है जिसमें एक तरफ तो पहाड़ हैं एक तरफ खाई है। सो इसमें चढ़ने के लिए अगर आप के अन्दर वो मन का बल, वो शक्ति, वो पावित्र्य, शुद्ध इच्छा नहीं हो। तो होगा नहीं, आप आधे–अधूरे ही बैठ जाएंगे। ये पहाड़ी पर, जो आपने देखा है, गधे पर बैठ कर लोग चढ़ते हैं। वो गधे से पूछा कि भई कि तुम कैसे गधे हो गए ? तो उसने कहा कि हम भी आप ही लोगों जैसे थे, लेकिन आधे–अधूरे रह गए तो भगवान ने हमको गधा बना दिया कि कम से कम गधे के रूप में ऊपर पहुँच जाओ। ये सब कथायें आपने सुनी हैं, पढ़ी हैं। हमारे देश में तो इसका भंडार है। इसके वाङ्मय का भंडार है। इतनी कथाएं हो गई, वो ज्यादातर हमारे उपदेश के लिए हैं, समझाने के लिए थी कि गलत रास्ते पर चलने से क्या होता है। दुनिया भर की कथाएं हो गई हैं और उसमें से जो कथा हमें कुछ न कुछ सबक देती है वही कथा असली है। सो बार–बार मुझे लग रहा है कि आज के दिन मुझे कुछ अच्छा कहना चाहिए था लेकिन ये बात मेरे सामने इतने जोरों में खड़ी हो गई, इस शिव पूजा में, कि मैंने सोचा अगर मैं नहीं कहूँगी तो कैसे होगा और शिवजी की पूजा में आप कह भी नहीं सकते क्योंकि शिवजी तो सिर्फ क्षमा ही करते हैं पर वो भी किसी हद तक और जब वो बिगड़ते हैं तो, आप जानते हैं, वो क्या करते हैं। उनसे मुझे सबसे ज्यादा डर लगता है क्योंकि ये अगर घोड़ा बिगड़ गया तो वो आपको ठिकाने लगा देंगे।

सहजयोग का ज्ञान सारा आपको एक तरह से मुफ्त है क्योंकि पूर्व जन्म बहुत बड़ा था। पूर्व जन्म की आपके अन्दर जो सम्पत्ति है उसके बूते पर आपने ये पाया। लेकिन सहज में आकर के, सब पाकर के, सम्पत्ति पाकर के और आप अगर बेकार ही जाने वाले हैं तो बेहतर है इसको छोड़ दो और हमें भी बख्शो। सोच–सोचकर के आज कहा, वैसे में सोचती कम हूँ, निर्विचार ही में हूँ लेकिन तो भी, मुझे चिन्ता इसलिए है कि मैंने आपको अपना बेटा माना, आपको अपनी बेटी माना तो आपके जो दोष हैं उसके कारण जब आप मिटते जाएं, मुझसे देखा नहीं गया। मुझे बहुत कष्ट हुआ। सहजयोग में सब है आनन्द, शान्ति। आपके प्रश्न चुटकी बजाते ही ऐसे ठीक हो जाते हैं, आप लोग जानते हैं, आपको अनुभव है। मुझे कोई खास बताने की जरूरत नहीं है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री गणेश पूजा

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

कबेला, 15 सितम्बर 1996

आज हम श्री गणेश की पूजा करेंगे। आज जबकि यूरोप और अमेरिका के देशों में पावित्र्य पर आक्रमण हो चुका है, मैं सोचती हूँ, इस पूजा के लिए यह अत्यन्त उपयुक्त समय है। पावित्र्य का कतई सम्मान नहीं किया जा रहा। वे नहीं जानते कि मानव के अपने अन्दर और बाहर भी पावित्र्य का सम्मान किया जाना कितना महत्वपूर्ण है।

मानव जीवन पशुओं के जीवन से भिन्न है। पशु सदा पाशबद्ध हैं या हम कह सकते हैं कि वे भगवान शिव की इच्छा में बंधे हुए हैं। इसलिए शिव पशुपति कहलाते हैं। परन्तु मानव को अपना उत्थान, उचित मार्ग और सत्य की खोज लेने की स्वतन्त्रता दी गई है। केवल अबोधिता द्वारा ही वे इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। अबोधिता ही आनन्द प्राप्ति का मार्ग है। अबोधिता के बिना व्यक्ति किसी भी चीज़ का पूर्ण आनन्द नहीं उठा सकता। आज इसी अबोधिता को चुनौती दी गई है।

अत्यन्त बुरे, अत्याचारी और अपराधी प्रवृत्ति के लोग अबोधिता (पावित्र्य) को समाप्त करने के लिए अत्यन्त सूक्ष्म रूप से कार्यरत हैं। उनके मस्तिष्क भूतबाधा ग्रस्त है। वैसे वे अत्यन्त बुद्धिमान हैं। वे बड़ी–बड़ी भयानक चीज़ों की सृष्टि करते हैं, अतः आप ये नहीं कह सकते कि वे बुद्धिमान नहीं हैं। परन्तु इतनी भयानक चीज़ों का सृजन करने के लिए उनके पास ज्ञान कहाँ से आता है ? सहजयोग की तरह से ही इस कलियुग में हर व्यक्ति जन्म ले सकता है, इसकी स्वतन्त्रता है। अब से पूर्व सभी प्रकार के असुर प्रवृत्ति के लोगों ने इतनी बड़ी संख्या में जन्म नहीं लिया था। ये दुष्ट लोग कुविचारों का सृजन करते हैं तथा लोग इन्हें ग्रहण करके इनके अनुसार चलने लगते हैं। यहाँ तक कि भले लोग भी इनके चक्कर में आ सकते हैं, सन्त पुरुष भी इससे प्रभावित हो जाते हैं।

सर्वप्रथम हमें समझना है कि हम एक संकटपूर्ण समय में अवतरित हुए हैं। ईसा मसीह के समय में बहुत कम लोगों ने उनका अनुसरण किया, उन्हें कुण्डलिनी की भी कोई अधिक समझ न थी। उन्हें इस बात का भी ज्ञान न था कि ईसा मसीह श्री गणेश के अवतरण थे। ईसाई देशों में ही आप ईसा का, अबोधिता का (कभी–कभी तो कानूनी रूप से) खुल्लम–खुल्ला अपमान स्वीकार करते हुए देख सकते हैं। तो जब भी हम ऐसी भयानक परिस्थितियों में फँस जाएं, हमें अपने अन्दर आध्यात्मिकता की एक महान शक्ति का सृजन करना होगा। आज जब मैं आई तो हवा बन्द थी, एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था, परन्तु जब आप भजन गाने लगे तो आप

लोगों में से अत्यन्त तेज शीतल लहरियाँ आ रही थी जिनसे मैं यह समझ गई कि दिव्य शक्ति अवतरित हो उठी हैं। यह मौजूद हैं और कार्यरत हैं। इतना ही नहीं ये अत्यन्त शक्तिशाली हैं। प्रायः चैतन्य लहरियाँ मेरी ओर नहीं आतीं ये मुझसे दूसरी तरफ जाती हैं। परन्तु आज इतनी तीव्र लहरियाँ थी कि मुझे किसी का हाथ पकड़ कर सहारा लेना पड़ा। अतः याद रखें कि यह जो सामूहिक शक्ति आपमें है इससे आपको इन भयंकर परिस्थितियों से मुकाबला करना होगा और यह साबित करना होगा कि अबोधिता सम्मान योग्य है।

आदिशक्ति ने सबसे पहले श्री गणेश का सृजन किया। उन्होंने ऐसा क्यों किया? क्योंकि चैतन्य, पावित्र्य और मंगलमयता से वे सारे वातावरण को भरना चाहती थीं। यह गुण अब भी है, सर्वत्र है, चैतन्य अब भी कार्यरत है परन्तु यह आधुनिक मस्तिष्क में प्रवेश नहीं कर सकता क्योंकि आधुनिक मस्तिष्क अबोधिता से अनभिज्ञ है। अबोधिता का इसे बिल्कुल ज्ञान नहीं । अबोधिता से ही जीवन में नैतिकता आती है। नैतिकता अबोधिता की अभिव्यक्ति है। अबोधिता से पता चलता है कि व्यक्ति दुष्चरित्र नहीं हो सकता।

एक बार मैं रूस गई और वहाँ कस्टम से बाहर आ रही थी। उन्होंने पूछा कि क्या आपको समुद्री जहाज से कुछ मिला ? मैंने उत्तर दिया हाँ निःसन्देह, मेरा उत्तर सुनकर उन्हें झटका लगा। आपको क्या मिला? थोड़ा पनीर और क्या, और कुछ पुस्तकें। पुस्तकें! वहाँ से आपको पुस्तकें नहीं लेनी चाहिए थी। मैंने पूछा क्यों? वह कहने लगे कि आपको सीमा कर देना पड़ेगा। क्या आपने इसके विषय में कोई नियम नहीं पढ़े, मैंने कहा नहीं, मैं अबोध थी। पुस्तकों पर सीमा कर देने के विषय में मैं कुछ नहीं जानती। नहीं नहीं आप मजाक कर रही हैं, आप जाइए। उन्होंने सोचा कि यह स्त्री अत्यन्त सादी है जबकि मैं जहाजरानी निगम के अध्यक्ष की पत्नी थी और बहुत बड़ी कार में जा रही थी। परन्तु वे इस बात को समझ न सके।

ये सारे कानून एवं नियम लोगों को बाँधते हैं। इनका उदय भी हमारे 'धर्म' के विचार से हुआ है। परन्तु अबोधिता धर्म की जड़ है और सारे कानून अबोधिता की रक्षा के लिए बनाए गए हैं अपराधियों को दंड देने के लिए नहीं। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में अबोध है तो अबोधिता उसकी रक्षा करती है। इस बात को मैंने अपने जीवन में बहुत बार देखा है, कभी मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। अबोध व्यक्ति से एक प्रकार की अत्यन्त तीव्र चैतन्य लहरियाँ आती हैं। छोटे बच्चों की चैतन्य लहरियों को यदि आप देखें तो 100 बड़े सहजयोगियों की चैतन्य लहरियाँ एक बच्चे के बराबर नहीं होतीं। परन्तु जब बच्चे बढ़ने लगते हैं तो वे भी बड़े लोगों की तरह बुद्धिमान एवं परिपक्व हो जाते हैं मानों उनकी अबोधिता खो गई हो, तथाकथित रूप से चतुर एवं बुद्धिमान होना उत्थान नहीं है, यह अत्यन्त आत्मघातक है।

जिन लोगों ने भी अबोधिता को हानि पहुँचाने की गलती की है उन्हें श्री सदाशिव या आदिशक्ति

से क्षमा माँगनी होगी। परन्तु श्री गणेश क्षमा नहीं करते, उनमें यही कमी है, वे क्षमा नहीं करते। आपने यदि उन्हें चोट पहुँचाई है तो वो भी आप पर आघात करेंगे। परिणामवश समाज में एड्स जैसी बीमारियाँ आ गई हैं क्योंकि लोग इस तरह जीवन यापन कर रहे थे मानों उन्हें मनमानी करने की आज्ञा सर्वशक्तिमान परमात्मा से प्राप्त हो गई हो! लोग इतने अहंकारी हैं कि वे समझते हैं कि जो चाहे वे करते रहें, उन्हें कुछ नहीं हो सकता। खुल्लम–खुल्ला वे चरित्रहीनता को अपना रहे हैं, अच्छे पढ़े–लिखे लोगों को मैंने बहुत गन्दे मजाक करते हुए देखा है। वे गलियों में घूमने वाले लोफर सम होते हैं। अतः यह रोग फैल गया है। युवाओं तथा बच्चों की अपेक्षा बड़े लोगों में यह अधिक है। मुझे लगता है कि लोग नन्हें बच्चों से ईर्ष्या करते हैं, नहीं तो वे उन पर आक्रमण क्यों करते। इसी ईर्ष्या के कारण ही वे बहुत ही भद्दे ढंग से आक्रमण करते हैं। परन्तु श्री गणेश इसे कभी क्षमा नहीं करेंगे। पहले वे उनका पर्दाफाश करेंगे, फिर कई जन्मों तक वे उन्हें इसका दण्ड देंगे। उनके परिवार अभिशप्त होंगे, वे स्वयं भी अभिशप्त होंगे। यही धर्मादेश है। परन्तु यदि श्री गणेश की माँ या पिता उन्हें क्षमा करने के लिए कह दें तो वे आज्ञा मान लेते हैं। माँ के तो वे पूरी तरह से आज्ञाकारी हैं। वे माँ से कभी प्रश्न नहीं करते, न ही कभी धृष्टतापूर्वक उन्हें उत्तर देते हैं। यद्यपि वे सभी गणों के देव हैं, गणाधीश हैं परन्तु माँ की हर बात को मानते हैं। माँ के सम्मुख वे एक नन्हें शिशु सम हैं। कभी वे अपनी माँ को चुनौती नहीं देते। माँ चाहे उनकी परीक्षा लेना चाहें या स्वयं को भ्रांत दर्शाना चाहें, वे कभी उन पर संदेह नहीं करते। अपनी माँ की माया में वे कभी नहीं फँसते, माया में वे नहीं फँस सकते क्योंकि वे इतने अबोध हैं। वे छाछ में से निकाले हुए मक्खन की तरह से हैं। यह मक्खन कभी भी छाछ में विलीन नहीं हो सकता। इसी प्रकार ये बालक, जो कि शुद्ध–अबोधिता है, अपनी माँ की माया से संदूषित नहीं हो सकता। माया लोगों को परखने की प्रक्रिया है, उनका परखा जाना भी आवश्यक है। अब देखते हैं कि लोग आजकल इतने चतुर हैं, इतने बुद्धिमान हैं, कि वे आदिशक्ति या किसी भी शक्ति के वश में नहीं हैं। किसी भी प्रकार वे धोखा देने का प्रयत्न करते हैं। बहुत लोगों ने मुझे धोखा दिया परन्तु उन्हें उनके किए का दण्ड मिल गया है। परन्तु यह दण्ड मैंने नहीं दिया। ये उन्हें श्री गणेश ने दिया है। वे चारों ओर खड़े हैं, यदि आपने ऐसा कोई अपराध करने का प्रयत्न किया तो वे आप पर कठोर आघात करेंगे। मैं इसमें कुछ नहीं कर सकती। यही श्री गणेश पृथ्वी पर भगवान ईसा मसीह के रूप में अवतरित हुए। ईसा मसीह श्री गणेश की अपेक्षा अधिक चुस्त हैं क्योंकि श्री गणेश मोटे हैं, वे लम्बोदर हैं और अपराधी को दण्ड देने में उन्हें समय लगता है। ईसा मसीह अपने को क्रूसारोपित करने वालों के लिए भी क्षमा याचना किया करते थे। परन्तु वे इतने चुस्त हैं कि मैं लोगों को उनकी बुराई न करने की राय देती हूँ। मेरे विरुद्ध न बोलें

ऐसा करना भयानक है। एक ओर श्री गणेश हैं और दूसरी ओर ईसा मसीह। दो अन्य देवदूत भी हैं, सेंट माईकल और सेंट गैबरील। संस्कृत भाषा में हम उन्हें श्री भैरव और श्री हनुमान कहते हैं। ये श्री महावीर और श्री बुद्ध के रूप में अवतरित हुए।

बुद्ध ने कहा है कि आपको किसी भी चीज़ से लिप्त नहीं होना है। अपने धन, दौलत, परिवार आदि किसी भी चीज़ से नहीं। उस समय बहुत अधिक लिप्सा थी और इस लिप्सा को वे लोगों के मस्तिष्क से दूर करना चाहते थे। नंगे रह कर, गेरुए वस्त्र पहन कर, सिर मुंडवा कर, या नंगे पाँव चल कर आप इस लिप्सा से छुटकारा नहीं पा सकते। ये सब बाह्य दिखावा है निर्लिप्सा नहीं। उन्होंने कहा कि आपको आन्तरिक रूप से निर्लिप्त होना है और आन्तरिक रूप से निर्लिप्त होना बाह्य रूप से निर्लिप्त होने से कहीं भिन्न है। बहुत अधिक व्रत करने से आप ईसा नहीं बन जाते, श्री महावीर की तरह घूमने से आप महावीर नहीं बन जाते और न ही गेरुए वस्त्र पहनने से बुद्ध बन जाते हैं। लोगों को जो समझाया गया था उसका कितना गलत अर्थ निकाला है। वह समय तपस्या का था और इसी कारण सभी लिप्साओं से मुक्त होने के लिए उन्होंने तपस्या करने को कहा। ईसाई धर्म में भी वैरागनियाँ (Nuns), धर्माध्यक्ष (The Father) मुख्य धर्माध्यक्षाएं (The Mother) बना दिए गए। यह एक बनावटी चीज़ है। ऐसा करने से क्या आप समझते हैं कि आप अबोध बन जाते हैं? वही धर्माध्यक्ष अब अबोध लोगों पर आक्रमण कर रहे हैं। बुद्ध भिक्षु, मैं कहूँगी, सबसे बुरे हैं क्योंकि वे तो सभी कुछ त्यागने को कहते हैं। ठीक है सभी कुछ त्याग दो और स्वर्ण के लिए भीख माँगो। इस प्रकार के प्रतिवाद को आप क्या कहते हैं ? कोई यदि भिक्षा माँग रहा हो तो लोगों को अच्छा लगता है क्योंकि इससे उनके अहम् को बढ़ावा मिलता है। ऐसे अवतरण हमें निर्लिप्त बनने का सन्देश देने के लिए आए ताकि हमारे चरित्र का विकास हो सके। यदि आप अपने यौन–जीवन से निर्लिप्त है, धन दौलत से निर्लिप्त हैं और अपने देश से भी यदि निर्लिप्त हैं तो इस प्रकार का निर्लिप्त व्यक्ति अबोध बन जाएगा और सभी झगड़े समाप्त हो जाएंगे। परन्तु वास्तव में तो इसके विपरीत हो रहा है। इस्लाम का भी यही हाल है। मोहम्मद साहब ने केवल सद्चरित्र पर बल दिया था, वे किसी भी प्रकार की चरित्रहीनता न चाहते थे। उस समय क्योंकि स्त्रियों की संख्या बहुत अधिक थी इसलिए उन्होंने कहा कि आप एक से अधिक भी विवाह कर सकते हैं। परन्तु उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि आप वेश्या बन जाएं या पापमय जीवन व्यतीत करें। उनका कथन तो मात्र 'समयाचार' था। उस समय वैवाहिक जीवन में समस्याएं थीं, तलाक की आज्ञा न थी। परन्तु सहजयोग में हम इसकी आज्ञा देते हैं।

आधुनिक युग में मैंने देखा है कि तलाक के बिना लोगों का काम नहीं चलता क्योंकि स्त्रियाँ भी कभी–कभी अत्यन्त क्रूर होती हैं और पुरुष अत्यन्त तुनक मिजाज़। ऐसी परिस्थितियों में वे साथी किस प्रकार हो सकते हैं ? अधिकतर स्त्रियाँ दुष्चरित्र हैं।

स्त्रियाँ मात्र अबोध ही नहीं हैं, शक्ति भी हैं। परन्तु अब तो वे बेशर्मी पर उतारू हो गई हैं। उन्हें अपने पावित्र्य की कोई चिन्ता नहीं, किस प्रकार वे शक्ति बन सकती है? कोई स्त्री यदि चरित्रहीन जीवन व्यतीत कर रही है तो उसकी शक्ति समाप्त हो जाएगी। स्त्री का चरित्र ही उसकी शक्ति है। श्री गणेश इस पवित्रता का संचार उसमें करते हैं। जिस प्रकार लोग, विशेषकर हॉलीवुड के लोग हमारे मस्तिष्क में विचार डाल रहे हैं और हम उन्हें स्वीकार करते चले जा रहे हैं, हम भूल जाते हैं कि हम श्री गणेश को चोट पहुँचा रहे हैं और उनका कोप हमारे पर बरस पड़ेगा। जब हम अपने बच्चों से घृणा करने लगते हैं तो यह कोप निम्न स्तर पर आरम्भ होता है। जब हम अपने बच्चों को नहीं समझ पाते तो समस्या आरम्भ होती है। इंग्लैण्ड में, कहते हैं, माता–पिता हर सप्ताह दो बच्चों की हत्या कर देते हैं। बच्चों के प्रति इस प्रकार का दृष्टिकोण! पहले तो उन्हें बच्चे पैदा ही नहीं करने चाहिएं और यदि बच्चे पैदा किए हैं तो वे श्री गणेश हैं, उन्हें बच्चों का सम्मान करना चाहिए, उनसे प्रेम करना चाहिए तथा उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। बच्चों को बिगाड़ना भी एक अन्य प्रकार की आसुरी शक्ति है। कुछ लोग अपने बच्चों को बिगाड़ देते हैं। परन्तु श्री गणेश को कभी बिगाड़ा नहीं जा सकता क्योंकि वे माया से परे हैं। परन्तु जिस प्रकार लोग अपने बच्चों के पीछे दौड़ते हैं, यह खेदमय है। उनके लिए एक बच्चे का होना महानतम उपलब्धि है। भारत जैसे देश में जहाँ इतनी अधिक जनसंख्या है वहाँ भी लोग बच्चों से बहुत अधिक लिप्त हैं। यह एक नए प्रकार की लिप्सा का आरम्भ है जो आप सहजयोगियों को चरित्रहीन कर देती है। जो सहजयोगी हैं, उनके लिए तो सारे विश्व के बच्चे अपने हैं। आपने केवल अपने बच्चों को ही प्रेम नहीं करना। कोई बच्चा यदि खराब है तो बात और है नहीं तो आपने सभी बच्चों को अपने बच्चों की तरह से प्रेम करना है। ईसा ने कहा है कि अपने पड़ोसी को भी वैसे ही प्रेम करो जैसे स्वयं को। मैं नहीं जानती कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा ? सभी ईसाई राष्ट्रों में तो पड़ोसी सबसे बड़ी समस्या है। अन्य बच्चों को भी अपने बच्चों सम प्रेम करें। आइए इस कथन को देखें।

आपके यदि बच्चे हैं तो प्रायः आपको कुछ स्थानोंपर फ्लैट लेने की आज्ञा नहीं मिलेगी। कल्पना कीजिए कि केवल अविवाहित या शिशु विहीन लोग ही वहाँ रह सकते हैं और यदि आपको बच्चा हो जाए तो आपको वहाँ से निकाल दिया जाता है। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं ? तीस वर्ष पूर्व लोगों के दस–बारह बच्चे हुआ करते थे। सहजयोगी दूसरी चरम सीमा तक चले जाते हैं, वे अपने बच्चों से चिपक जाते हैं। मैं यह नहीं कह रही हूँ कि आप किसी प्रकार अपने बच्चों की उपेक्षा करें, उन्हें मारें–पीटें या उन्हें दुःख दें। आप उन्हें इस प्रकार प्रेम करें कि वे जान जाएं कि यदि उन्होंने कोई गलती की तो उन्हें आपका प्रेम मिलना बन्द हो जाएगा। बच्चों का यह जानना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि प्रेम उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आपको

जो भी बात पसन्द न हो उनसे बता दें। आप हैरान होंगे कि किस प्रकार आपको नाराज करने वाला कोई भी कार्य करना बच्चे छोड़ देते हैं। अब यह तो सब चालाकी है जो सभी को सीखनी है। बच्चों के विकास के लिए यह बहुत अच्छा तरीका है।

मैं आपको अपनी बेटी की कहानी सुनाती हूँ। वह दिल्ली गई और वहाँ सभी लड़कियाँ बिना बाजू के ब्लाउज पहने हुए थीं। तो उसने मुझसे कहा कि मुझे भी बिना बाजू के ब्लाउज चाहिएं। वह बड़ी हो चुकी थी, कॉलेज जाने लगी थी, मैंने कहा ठीक है जो तुम्हें चाहिए ले लो। वो कहने लगी, वैसे आप बिना बाजू के ब्लाउज क्यों नहीं पहनती ? मैंने कहा मुझे शर्म आती है। तो आप मुझे इसकी आज्ञा क्यों दे रही हैं ? ये कोई मापदण्ड नहीं कि मैं जो भी आपसे माँगू आप हाँ कर दें। मैं इतनी बड़ी तो नहीं हो गई हूँ। मेरी नातिन ने भी मुझसे पूछा कि नानी आप सदा बाजुओं वाले ब्लाउज क्यों पहनती हैं। मैंने कहा, क्या तुम्हें पता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण चक्र हैं। यदि आप इन्हें खुले रखोगी तो आपको समस्या हो जाएगी। हे परमात्मा, अब मैं पूरी बाजू वाले ही कपड़े पहनूंगी। तुरन्त उनकी समझ में आ गई। अतः उनके अन्तर्विवेक का सम्मान रखते हुए, गहनतापूर्वक यदि आप उन्हें कोई गहन बात बतायेंगे तो उनका सुधार होगा। उदाहरण के तौर पर कोई बच्चा बिगड़ गया है, कक्षा में उसका बुरा हाल है। अब एक तरीका तो यह है कि उसकी पिटाई की जाए, उस पर चिल्लाया जाए और उसे डाँटा जाए। दूसरा तरीका यह है कि उससे बातचीत की जाए कि मान लो आप अच्छे नम्बर लाते हैं, अव्वल आते हैं तो आप महान व्यक्ति बन जाएंगे। मुझे आप पर कितना गर्व होगा। सभी लोगों को आप पर गर्व होगा। परन्तु यदि ऐसा नहीं होता तो सभी लोग कहेंगे कि यह लड़का बेकार है। इसे गलियों में भीख मांगनी पड़ेगी और वह बच्चा तुरन्त परिवर्तित हो जाएगा। बच्चों का संचालन करना बहुत महत्वपूर्ण है। अत्यन्त कोमलता से अन्तर्विवेक का संचालन किया जाना चाहिए। मानो आप किसी फूल को संभाल रहे हों। यह एक फूल है, जिस प्रकार फूल में सुगन्ध होती है उसी प्रकार अबोधिता में भी सुगन्ध होती है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

हॉलैण्ड के विषय में श्री माता जी के विचार

कई अवसरों पर श्री माता जी ने इस देश के स्वभाव और गुणों के विषय में बताया। 1985 में अपनी पहली यात्रा में उन्होंने अपनी त्रिगुणात्मिका पूजा करने का सौभाग्य प्रदान किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, "हॉलैण्ड यूरोप की पावन भूमि (Holy-Land) है"। उन्होंने विस्तारपूर्वक बताया कि हॉलैण्ड में पृथ्वी (माँ) और जल (सागर–गुरु) का अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। आप जानते हैं कि हॉलैण्ड का अधिकांश भाग सागर तल से नीचे है। रेत के टीलों तथा बाँधों से यह सुरक्षित है और भौगोलिक दृष्टि से इसमें बहुत सी खाड़ियाँ हैं जिनके माध्यम से समुद्र इस देश में बहुत ही गहराई में प्रवेश करता है।

श्री माता जी ने प्रायः भिन्न देशों के भिन्न गुणों के विषय में बताया है तथा यह भी कहा है कि इन देशों ने महान दिव्य अस्तित्व–विराट– में कुछ विशेष कार्य करने हैं। हम जानते हैं कि **फ्राँस विराट का जिगर है, इंग्लैण्ड हृदय है, आस्ट्रेलिया मूलाधार है आदि आदि**। फिर भी इन देशों के, विशेषकर छोटे देशों के सूक्ष्म गुणों तथा तत्वों के विषय में हमारा ज्ञान काफी सीमित है। डिवाइन कूल ब्रीज के इस नए लेख में एक–एक करके सभी देश पेश होंगे तथा श्री माता जी द्वारा बताए गए उनके विशेष गुणों तथा विराट में अपनी सूक्ष्म भूमिका का एक दृश्य दर्शाएंगे। इस प्रकार हमें न केवल एक–दूसरे के विषय में अधिक जानने का अवसर प्राप्त होगा बल्कि यह विराट में कार्यशील तत्वों की कार्यशैली का अच्छा ज्ञान भी हमें प्रदान करेगा। इस शृंखला की यह दूसरी कड़ी है।

इस स्थिति का हवाला देते हुए श्री माता जी ने कहा, "सागर अशुद्धियों को दूर करता है तथा पृथ्वी माँ हॉलैण्ड के लोगों को आशीर्वादित करती हैं। पृथ्वी माँ ने समुद्र को अन्दर बहने की आज्ञा दी है, समुद्र ने पृथ्वी माँ में शरण ली। गुरु मातृत्व के गुणों में बँध गया है"। श्री माता जी ने बताया कि पृथ्वी समुद्र को स्वयं में संभाले हुए है। अतः यह सदा समुद्र से महान है। इसीलिए हॉलैण्ड एक विशेष स्थान हैं जहाँ गुरु ने माँ के सम्मुख समर्पण किया है। श्री माता जी ने बताया कि पवित्र होने का अर्थ यह है कि हम गुरु तत्व को मातृत्व से नियन्त्रित, पथ–प्रदर्शित तथा अलंकृत होने दें। मातृत्व के गुण अपना लेने से और अपने गुरु तत्व को मातृत्व एवं सुन्दर सृजनात्मक शक्तियों से मर्यादित कर लेने पर हमारी उपस्थिति सुखद हो जाती है। पूजा वार्ता में श्री माता जी ने श्रम विभाजन तथा बेरोजगारी के समाधान के विषय में विस्तारपूर्वक बताया।

1986 के अपने दौरे में उन्होंने बताया था कि

विराट की लीला में हॉलैण्ड और बैल्जियम एक–दूसरे से सम्बन्धित हैं, दोनों देश बायीं नाभि का हिस्सा हैं। बैल्जियम विश्व शान्ति का तथा हॉलैण्ड न्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये दोनों ही गुण परस्पर आश्रित हैं, एक–दूसरें के बिना चल नहीं सकते। जहाँ भी अन्याय होगा वहाँ शान्ति नहीं हो सकती। जिन देशों में अशान्ति है वहाँ न्याय के नियम को चुनौती दी जाती है तथा यह न्याय भ्रष्ट हो जाता है। हेग (Hague) के न्याय के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय (International High Court of Justice) में न्याय तत्व प्रकट होता है। श्री माता जी ने यह भी बताया कि दुर्भाग्यवश हॉलैण्ड के कानून अत्यन्त धूर्त एवं परमात्मा विरोधी हैं। हॉलैण्ड की बहुत सी चीज़ों के सहन किए जाने पर कई बार पड़ोसी देश आश्चर्यचकित हो जाते हैं। डच (Dutch) नशा कानून इसका एक ज्वलंत उदाहरण है।

श्री माता जी ने विस्तारपूर्वक समझाया कि जो देश बायीं नाभि का प्रतिनिधित्व करता है वहाँ कि स्त्रियों को कितनी अच्छी गृह लक्ष्मियाँ होना चाहिए। लक्ष्मी जी के बहुत से रूप हैं और गृहलक्ष्मी उनकी सर्वशक्तिशाली अभिव्यक्ति है। **बायीं नाभि,प्लीहा और अग्नाशय से नियन्त्रित है। प्लीहा क्योंकि गतिमापी है, इसलिए आवश्यक है कि जीवन में उचित गति तथा लय हो।** बिना उपयुक्त अवसर के, विशेषकर प्रातःकाल कष्टदायी मामलों पर बातचीत न करके अच्छी मनोस्थिति बना कर गृहलक्ष्मी पति की जीवन–लय को नियमित करती है। पृथ्वी माँ की तरह गृहस्थी की सारी समस्याओं को सहते हुए, स्वयं में समोहते हुए, वह शान्ति की स्थिति का सृजन करती है। वह इतनी परिपक्व होती है कि वाद–विवादों की व्यर्थता को समझती है। गृहलक्ष्मी इतनी शक्तिशाली होती है कि वह केवल देना ही जानती है और इससे उसे इतना आनन्द मिलता है कि वही उसकी शक्ति का स्रोत बन जाता है।

हॉलैण्ड अपने सुन्दर पुष्पों के लिए विख्यात है। बसन्त ऋतु में बड़े–बड़े खेतों में जब फूल खिलते हैं तो खेत इन्द्रधनुषी रंगों से चमक उठते हैं। एक दिन किसी ने श्री माता जी से पूछा कि हॉलैण्ड में इतनी बुराईयों के बावजूद भी यह देश अभी तक समुद्र के गर्भ में क्यों नहीं समा गया? मुस्कराते हुए उन्होंने उत्तर दिया, "क्योंकि हॉलैण्ड आदिशक्ति के लिए पुष्प उगा रहा है और आप जानते हैं कि वे फूलों की अत्यन्त शौकीन हैं"।

25

सिडनी वायुपत्तन वार्ता

(सारांश)

सिडनी, आस्ट्रेलिया – 5 मार्च 1996

आप सब लोगों से मिलकर सदा प्रसन्नता होती है, परन्तु इस बार मुझे लगा कि आप लोग आनन्द के सागर में आत्मानन्द लेते हुए, हिलोरे ले रहे हैं। मेरे लिए यही महानतम संतोष है। अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना ही आत्मानन्द प्राप्त करने का सर्वोत्तम मार्ग है। अपनी सत्य की आवाज़ का यही वास्तविक गुन्जन है जिसे आप प्राप्त करते हैं। अन्य देशों की तरह से आप भी भिन्न स्थानों, भिन्न गाँवों, आस–पड़ोस के स्थानों पर जाते हैं और पूर्ण विश्वास के साथ सहजयोग की बात करते हैं कि किस प्रकार इसने आपके जीवन को परिवर्तित कर दिया और आपको इससे कितना लाभ हुआ। सत्य निष्ठापूर्वक लोगों को परिवर्तित करके आप अपने देश की बहुत सेवा कर सकते हैं।

आस्ट्रेलिया में सहजयोग काफी बढ़ा है। कई बार कुछ व्यक्तियों ने हमें क्षति पहुँचाने का प्रयत्न किया परन्तु किसी ने भी सहजयोग को हानि पहुँचाने की कोशिश नहीं की। जिन्होंने भी समस्यायें उत्पन्न करने की कोशिश की वे चुपके से सहजयोग से गायब हो गए।

सभी लोग परस्पर सहयोग करें। आपको मजबूर नहीं करेगा, किसी को विवश नहीं किया जाएगा। परन्तु यह तो आपकी अपनी संतुष्टि के लिए है। सभी लोग सहजयोग के प्रति स्वयं को जिम्मेदार समझें। यदि आप स्वयं को जिम्मेदार नहीं समझते तो व्यक्तिगत रूप से आप आनन्द नहीं उठा सकते।सहजयोगियों के लिए व्यक्तिगत आनन्द नहीं है। सामूहिकता में ही आप आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

जब अजन्ता की गुफायें बनी थीं तो इन्हें बनाने में ग्यारह सदियाँ लगीं। एक के बाद एक पीढ़ी ने इसे उत्साहपूर्वक बनाया, यद्यपि उन्होंने न तो बुद्ध को देखा था न उनसे बात की थी और न कभी उन्हें पत्र लिखे थे। परन्तु वे अत्यन्त समर्पित थे। उस एकान्त स्थान पर वे पीढ़ी दर पीढ़ी रहे और आज के विश्व के चमत्कारों मे से एक की सृष्टि की।

अतः आप लोगों को समझना है कि साक्षात्कारी होने के कारण अपनी इच्छा और समर्पण के माध्यम से आप बहुत कुछ कर सकते हैं। सदैव आपको स्वयं से पूछना चाहिए कि आप सहजयोग के लिए क्या कर रहे हैं और यह भी महसूस करना है कि

सहजयोग ने आपके लिए कितना कुछ किया है। अतः इस बात को जान लेना ही, कि आप सहजयोग के लिए कुछ कार्य कर रहे हैं, आप के लिए आनन्द उठाने का एकमात्र तरीका है।

अगुआ को अत्यन्त सावधान विवेकशील और करुणामय होना चाहिए, परन्तु अब क्योंकि सहजयोग में बहुत से लोग आएंगे अतः अगुआ अत्यन्त प्रगल्भ व्यक्ति होना चाहिए। आपको नए लोगों से व्यवहार करना होगा और ऐसा करते हुए याद रखना होगा कि आप सहजयोगी हैं, आपने उनसे गुस्से नहीं होना। उनके प्रति करुणामय हों और उनसे कम बोलें और और उनकी कुण्डलिनी उठाते हुए अधिक कार्य करें। उन्हें छुएं नहीं। ऐसा करना आवश्यक नहीं है।

श्री माता जी ने तत्पश्चात् भारतीय महिलाओं से हिन्दी में बातचीत की। "मैं उन लोगों की त्रुटियों को सुधार रही थी और उन्हें बता रही थी कि वे अपनी संस्कृति के अनुसार चलें"। कुछ ने अमेरिकन महिलाओं की तरह अभद्रतापूर्वक बातचीत करनी शुरु कर दी है। भारत में महिलाएं विशेषरूप से नम्र होती हैं और उनकी भाषा अत्यन्त करुणामय तथा नम्र होती हैं जो अन्य लोगों को सुख प्रदान करती हैं। परन्तु अमेरिकन संस्कृति लोगों को पागल बना देती है और इसे अपनाने वाले लोग भी पगला जाते हैं। हमें इस संस्कृति की आवश्यकता नहीं है। "हमें एक अत्यन्त करुणामय, अच्छी, विनम्र एवं सुन्दर संस्कृति चाहिए। जिनके माध्यम से अन्य लोग सीख सकें और हमारे बच्चे उचित रूप से बढ़ सकें। यदि आप नम्र हैं तो इससे आपको बहुत सहायता मिलेगी।"

ये देखकर अत्यन्त आनन्द मिलता है कि आस्ट्रेलिया के सहजयोगी कितने नम्र होते हैं। ये लोग बहुत भयानक हुआ करते थे, बहुत अधिक पीते थे और इस प्रकार बातचीत करते थे कि समझ पाना कठिन था। अब आप लोग उन कमलों की तरह से सुन्दर हैं जो इस मिली–जुली अव्यवस्थित संस्कृति से उपजे हैं, और आप ही लोगों को हमारी सहज संस्कृति का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।

मैं आप लोगों और आपके बच्चों के लिए एक बहुत अच्छी वैभवशाली, स्वस्थ सहज जीवन की कामना करती हूँ। आस्ट्रेलिया क्योंकि श्री गणेश का देश है, सहजयोग ने यहाँ पर बहुत अच्छी जड़ें पकड़ी हैं। श्री गणेश का आशीर्वाद यहाँ कार्य कर रहा है। आपको चाहिए कि रोगियों और जरूरतमंद लोगों की मदद करें। समझने का प्रयत्न करें कि किस प्रकार उन्हें रोगमुक्त करना है, उन्हें छुएं नहीं। कुछ भी करने से पूर्व आप बन्धन ले सकते हैं और आपकी रक्षा की जाएगी।

परमात्मा आप सबको धन्य करें।

नवरात्रि पूजा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

कबेला, इटली–20 अक्टूबर 1996

आज का दिन अति विशिष्ट है और हम देवी की पूजा कर रहे हैं। अपने भक्तों को पूजा के लिए मुक्ति प्रदान करने हेतु, राक्षसों तथा आसुरी शक्तियों का सफाया करने के लिए देवी, इससे पूर्व, नौ बार पृथ्वी पर अवतरित हुईं। उनके सारे कार्यों का वर्णन किया जा चुका है। इसके बावजूद भी सभी प्रकार के असुर तथा बुरे लोग पृथ्वी पर लौट आए हैं। सम्भवतः ये होना ही था। आखिरकार ये कलियुग है और इन लोगों के पृथ्वी पर आए बिना कलियुग का यह नाटक पूर्ण न हो पाता। ये लोग लौट आए हैं परन्तु इस बार एक भिन्न प्रकार का ही युद्ध होने वाला है। यद्यपि विश्व में ऐसा पहले कभी घटित नहीं हुआ फिर भी यह शांत लोगों का युद्ध होगा, शांत लोग जीवन के हर क्षेत्र में अत्यन्त सफल होते हैं।

कहते हैं जब चंगेज खाँ भारत आया तो 'गया' के समीप एक बौद्ध मठ में गया और वहाँ पर उपस्थित तीस हजार बौद्ध भिक्षुओं को मौत के घाट उतार दिया। बिना विरोध किए सब मारे गए। इसके कारण लोगों का विश्वास बौद्ध धर्म से उठ गया। लोग कहने लगे कि यह कैसा बौद्ध धर्म है? भगवान बुद्ध ने इनकी रक्षा क्यों नहीं की ? मानव के सोचने की यही शैली है। परन्तु आप हैरान होंगे कि इस कलियुग में बहुत से लेखकों ने चंगेज खाँ की बहुत प्रशंसा की है और उस पर पुस्तकें लिखी गई हैं। वह मुसलमान नहीं था, एक प्रकार का पागल व्यक्ति था। उसने बहुत सी मस्जिदें तोड़ डालीं, बहुत सी सुन्दर इमारतों को तहस–नहस कर डाला और भारत आकर यहाँ थोड़े से समय के लिए राज्य भी किया। यह सब इतिहास है। इसी प्रकार ईसाइयों और अन्य लोगों, मुसलमानों और गैर मुसलमानों के मध्य भी युद्ध हुए। हमने सभी प्रकार के युद्धों के विषय में सुना है जिनमें केवल श्रद्धावान तथा वास्तविक लोग ही मारे गए। वे लोग मारे गए जो पूर्ण श्रद्धा से परमात्मा की पूजा किया करते थे। अतः बहुत से लोग नास्तिक हो गए और कहने लगे कि परमात्मा नाम की कोई चीज़ नहीं है, दिव्य शक्ति कुछ भी नहीं है, ये कभी नहीं थी, आप मूर्ख हैं जो इसका अनुसरण कर रहे हैं। धर्माधिकारी लोगों ने इसका पूरा लाभ उठाया और कहा कि ये लोग पापी हैं। इन लोगों को मार कर उन्होंने कहा कि ये परमात्मा विरोधी थे इसीलिए हमनें इनका वध किया है और हम विजयी हुए हैं।

अब हम कलियुग में आते हैं। कलियुग में भी

भिन्न प्रकार से वही चीज़ आरम्भ हो गई हैं। अत्यन्त सूक्ष्म रूप से परमात्मा विरोधी लोगों में तथा उन लोगों में जो परमात्मा का उपयोग अपने मतलब के लिए कर रहे हैं–अत्यन्त बेईमान, भ्रष्ट और अत्याचारी लोग, जो परमात्मा के झण्डे का दुरुपयोग कर रहे हैं, जबकि ऐसा करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं– युद्ध जारी है। अब सहजयोगी भी हैं जिन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है और जिन्हें इन आसुरी शक्तियों से युद्ध करना है। पुरानी लड़ाई और इस लड़ाई में अति सूक्ष्म अन्तर है। जो लोग सफल हुए उन्हें बहुत आत्मविश्वास हो गया कि उन्होंने अपना लक्ष्य पा लिया है। परन्तु कलियुग के प्रकाश में ये सब ऐतिहासिक रहस्य अत्यन्त शर्मनाक माने जाते हैं, इन्हें अत्यन्त आक्रामक एवं मूर्खतापूर्ण समझा जाता है। हर जगह पर अब इसका वर्णन हो रहा है जैसेः गोरे लोग अमेरिका गए और वहाँ के अन्य सभी लोगों का वध कर दिया। यह चीज़ अब प्रकाश में आ रही है। जो लोग स्वयं को विजेता मानते थे उनके बच्चे, नाती, पोते उनकी आने वाली पीढ़ियाँ उनसे शर्मिन्दा हैं।

पिछले महायुद्ध तक जो चेतना जागृत हुई है वह कलियुग के इस आधुनिक काल की वास्तविक विजय है। जिन चीज़ों को जीवन का एक हिस्सा मान लिया गया था, जिन्हें जीवन शैली समझ लिया गया था, आधुनिक युग में उन्हें हर जगह चुनौती दी जा रही है। सभी प्रकार की आक्रामकता, अत्याचार और क्रूरता को अब दण्डित किया जा रहा है। हो सकता है कि बहुत से युद्ध के अपराधी बच निकले हों परन्तु बहुतों पर मुकदमें भी चलाए गए। पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। चंगेज खाँ पर किसी ने मुकदमा नहीं चलाया था। अब, अति सूक्ष्म रूप से, ये सब आक्रांता घबरा रहे हैं कि उनसे प्रश्न किए जा सकते हैं और उन्हें यातनाएं भी दी जा सकती हैं। इटली में मुसोलिनी नामक आक्रांता थे जिन्हें आखिरकार फाँसी पर चढ़ा दिया गया। जर्मनी में हिटलर नामक एक शक्तिशाली व्यक्ति हुए। आज जर्मनी के ही लोग उसका नाम तक नहीं लेना चाहते। वे उससे शर्मिन्दा हैं। इंग्लैण्ड के वारन हेस्टिंग, जो भारत आए थे, पर भी मुकदमा चलाया गया। नेपोलियन ने जनता पर अत्याचार किए और सोचा कि वह बहुत बड़ा विजेता है। परन्तु वह भी अधिक दिन न चल सका, उसे अपने किए का परिणाम भुगतना पड़ा। सभी आक्रमणकारी, व्यर्थ का रौब झाड़ने वाले, क्रूर, असुर प्रवृत्ति लोगों को प्रायः उनके जीवनकाल में ही दण्ड भुगतना पड़ा। जीवनकाल में यदि वे बच गए तो मृत्यु के बाद में उनकी बदनामी हुई। कोई उनका बुत नहीं खड़ा करना चाहता। लोगों के मस्तिष्क में चेतना जाग उठी है। एक समय पर जिस स्टालिन (Stalin) का रूस में शासन था, आज आप वहाँ उसका एक भी बुत नहीं देख सकते।

आधुनिक युग की शक्ति को देखें, जो लोग

ये समझते हैं कि वे अपने कारनामों के परिणाम से बच निकलेंगे वो आज इस शक्ति से भयभीत हैं। बहुत शीघ्र ही वे इस बात को समझ जाएंगे कि या तो वे इस मूर्खता को छोड़ दें अन्यथा उन्हें कष्ट उठाना होगा। प्रभुत्व जमाने वाले लोगों को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक कष्ट उठाने होंगे और उनका यश भी मिट्टी में मिल जाएगा। परमेश्वरी माँ की शक्ति की विजय एक बहुत महान कार्य कर रही है और वह है अनावरण करना। इस अनावरण के माध्यम से उन लोगों की खुल्लम–खुल्ला भर्त्सना की जाएगी। इस दृष्टिकोण से जब आप देखेंगे तो समझ जाएंगे कि किस प्रकार से अब हम विजेता हैं।

सहजयोगियों के रूप में हमें उस समय की चेतना तथा आज की जागरुकता के बीच भेद को देखना चाहिए। उस समय असुरों को समाप्त करना और उनका वध करना आवश्यक था। परन्तु एक बार फिर वे संसार मंच पर वापस आ गए हैं। अब कलियुग में उनका पर्दाफाश हो रहा है, उनकी निन्दा हो रही है, उन्हें जेल भेजा जा रहा है और दण्डित किया जा रहा है। अतः सामूहिक जागरूकता की उन लोगों पर, जो आए, लोगों की हत्याएं की और बिना दण्डित हुए, बिना बदनाम हुए चले गए, अति महान विजय हुई है।

आइए देखें कि चेतना (Consciousness) और जागरूकता (Awareness) क्या है। चेतना वह है जब आपको चेतन किया जाता है, आप किसी चीज़ के प्रति सचेत हो जाते हैं। जैसे ये मेरा हाथ है, परन्तु मैं इसके विषय में सचेत नहीं होती कि मेरा एक हाथ है। यदि कोई व्यक्ति सो रहा है तो वह इस बात के प्रति सचेत नहीं है कि वो सोया हुआ है। जब आप मुझे बताते हैं कि मेरा एक हाथ है तो मैं हाथ के प्रति सचेत होती हूँ या कोई मुझे कुछ चुभाता है तो मेरा ध्यान उसकी ओर जाता है, अन्यथा मैं इसके प्रति सचेत नहीं होती। अपनी आँखों के प्रति मैं पूर्णतः अचेत हूँ। मैं सभी कुछ देख रही हूँ। परन्तु मान लो मैं अंधी हो जाती हूँ और कुछ नहीं देख सकती, तब मैं अपनी आँखों के प्रति सचेत हो जाऊंगी कि मेरी आँखें हैं, जिनसे मैं देख नहीं सकती। तो एक बार जब आप कहते हैं कि ये हाथ यहाँ है तो उसके प्रति चेतना होती है। आप कह सकते हैं कि यह हाथ का ज्ञान है, आप हाथ के विषय में ज्ञान पा लेते हैं। परन्तु जब भी आप हाथ के विषय में सचेत नहीं होते तो यह ज्ञान लुप्त हो जाता है। तो ये कहना कि ज्ञान भाव (Ignorance) है या ज्ञान (knowledge) है, दोनों ही बातें समान हैं। आप क्योंकि हाथ के प्रति सचेत नहीं हैं तो आपको इसका ज्ञान नहीं है। अब मान लो कोई कहता है कि आपके हाथ बड़े सुन्दर हैं, तब मैं अपने सुन्दर हाथ के प्रति चेतन हो जाती हूँ, अन्यथा मुझे पता ही नहीं था कि मेरा हाथ सुन्दर हैं। प्रायः सभी व्यक्ति इसी स्तर पर रहते हैं जहाँ किसी अन्य को

उन्हें सचेत करना पड़ता है। अब कोई कहता है कि आप बहुत अच्छी साड़ी पहने हैं। तब मैं इसको देखूंगी, हाँ यह बहुत अच्छी साड़ी है। मुझे तो इसका पता ही नहीं था। अतः किसी व्यक्ति के बताने पर ही आप सचेत होते हैं, उसके बिना नहीं। सभी मानव इसी स्तर पर हैं।

अब जागरूकता क्या है ? यह एक अलग चीज़ है। मैं यदि किसी व्यक्ति को अपने पर आक्रमण करते हुए देखूं तो बचाव के लिए मैं हाथ उठा दूंगी। इसका अर्थ यह हुआ कि मैं जागरूक हूँ कि मेरे हाथ हैं, मैं सचेत नहीं हूँ परन्तु जागरूक हूँ कि मेरा हाथ है और मैं ऐसा करती हूँ। जैसे : यहाँ इटली में हर समय आप अपने हाथ हिलाते रहते हैं, इसका अर्थ यह हुआ कि आप जानते हैं कि आप जागरूक हैं कि आपके हाथ हैं और अभिव्यक्ति करते हुए, किसी चीज़ पर बल देने के लिए आपने इनका उपयोग करना है। अतः आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने से पूर्व हम शरीर के प्रति जागरूक होते हैं, अन्य लोगों के प्रति जागरूक होते हैं, अन्य लोगों के विषय में जानते हैं। हम जानते हैं कि अमुक व्यक्ति कैसा है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने के पश्चात् जो घटित होता है वह अत्यन्त दिलचस्प है तब आप इन दोनों स्थितियों– चेतनता और जागरूकता– से ऊपर उठ जाते हैं क्योंकि आप विचारों से परे चले जाते हैं। विचारों से परे चले जाने का अर्थ है कि क्रोध, सभी प्रकार के विचार, सभी प्रकार की आक्रामकता, इन सबकी सृष्टि आपके मस्तिष्क की चालाकियों से होती है। परन्तु यदि आपका मस्तिष्क ही सो जाए तो आप क्या करेंगे ? अब मस्तिष्क बाकी नहीं रहा, आप वास्तविकता में जीवित हैं। अतः संचार के लिए मस्तिष्क नहीं है। हम इसे निर्विचार–समाधिस्थ लोग कहते हैं। एक दुश्मन– हमारा मस्तिष्क– को त्याग कर हमने सभी दुश्मनों पर विजय प्राप्त की है। अब सलाह देने के लिए मस्तिष्क बाकी नहीं है, आपको कुछ बताने के लिए मस्तिष्क बाकी नहीं है। एक बार जब मस्तिष्क नहीं रह जाता तो आप खो जाते हैं।

अब कहा जा सकता है कि आप स्वयं से एक प्रश्न पूछें– मैं कौन हूँ ? ज्यों ही आप प्रश्न पूछते हैं आप निर्विचार हो जाते हैं अर्थात् आप खो जाते हैं। इस प्रश्न का उत्तर आप नहीं दे सकते। अन्यथा आप कह सकते थे कि मैं एक स्त्री हूँ, मैं ये हूँ, मैं वो हूँ, मैं विशेष हूँ, मैं पोप हूँ। परन्तु आत्मसाक्षात्कार पाने के पश्चात् आपको कौन बताएगा कि आप क्या हैं ? क्योंकि बताने वाली चीज़ तो मस्तिष्क है और उसका अस्तित्व नहीं रहा। विचारों के लुप्त होने का अर्थ है कि आप स्वयं में ही विलीन हो गए। यही वास्तविकता है। परन्तु आप जागरूक भी हैं। यह एक अन्य बात है। आप यदि स्वयं से प्रश्न करें, आप वहाँ नहीं होते फिर भी आप जागरूक हैं। यदि आपकी नाभि पकड़ रही है तो आप तुरन्त जान

जाते हैं, ओह मेरी नाभि पकड़ रही है। मुझे इसे साफ करना है। आपको प्रश्न नहीं पूछना पड़ता। या यदि कोई बायें स्वाधिष्ठान वाला व्यक्ति आपके पास खड़ा है तो आप कह उठेंगे, हे परमात्मा! या यदि कोई व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का है या बहुत क्रुद्ध है तो उस व्यक्ति से आपको इतनी गर्मी आएगी कि आप उससे दूर भाग खड़े होंगे।

यह एक नया क्षेत्र है, आप उस वास्तविकता में प्रवेश कर गए हैं जिसके प्रति पहले आप कभी जागरूक न थे। अब मान लो कोई बहुत बुरा व्यक्ति आपके समीप खड़ा है, वह चोर, खूनी आदि कुछ भी हो सकता है। उसके प्रति जागरूक होना तो दूर आप सचेत भी नहीं होंगे। परन्तु यदि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं तो आप पूर्ण के प्रति जागरूक हो जाते हैं। ये वास्तविकता है। समस्याएं क्या हैं ? सामूहिकता में आप सामूहिक के प्रति जागरूक हो जाते हैं, पूरे विश्व की समस्याओं के प्रति जागरुक हो जाते हैं। यह जागरूकता अत्यन्त भिन्न है।

पहली जागरूकता इस प्रकार है मान लो कोई आप से बताता है कि आप ऐसे हैं तो आप सचेत हो जाते हैं। परन्तु इसमें किसी को बताना नहीं पड़ता, यह जागरूकता विद्यमान है। आप जागरूक हैं और जानते है कि क्या है। आधुनिक युग में आपने यही उपलब्धि पाई है और यही इस युग का आशीर्वाद है कि अब हम जानते हैं कि हम कौन हैं। आप सदैव कहते हैं कि आप पवित्र आत्मा हैं। कौन सी चीज़ आपको विश्वास दिलाती है कि आप पवित्र आत्मा हैं ? आपने कभी अपनी आत्मा को नहीं देखा, क्या आपने कभी देखा ? आपने कभी स्वयं को नहीं देखा कि आप क्या हैं तो आप कैसे कह सकते है आप पवित्र आत्मा हैं ? आप यह बात केवल इसलिए कह सकते हैं क्योंकि मैं कहती हूँ। परन्तु क्योंकि पवित्र आत्मा का वर्णन जिस प्रकार किया गया है, कि यह दिव्य शक्ति के प्रति जागरूक है, इसका आपने अनुभव किया है इसलिए आप पवित्र आत्मा हैं। क्योंकि केवल पवित्र आत्मा को ही अपना व्यक्तित्व बना कर आप परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति के प्रति जागरूक हो सकते हैं। इस प्रकार आप पवित्र आत्मा हैं। इसका वर्णन सभी शास्त्रों में, सभी धर्मग्रन्थों में और सभी जगह किया गया है। किस प्रकार आप जानते हैं कि आप पवित्र आत्मा हैं ? क्योंकि आपको अपने चक्रों का ज्ञान है, आपको अपनी नाड़ियों का ज्ञान है। अब जो हो रहा है वह यह है कि **आप स्वयं से अलग हो गए हैं और स्वयं को देख सकते हैं।** आप स्वयं को अति स्पष्ट देखते हैं और स्वयं को भूत, भविष्य और वर्तमान के रूप में देखने लगते हैं। भूतकाल में मैं क्या था ? आपको धक्का लगता है, 'हे परमात्मा मैं ऐसा था!' वर्तमान अवस्था में इसे देखें। इसे वर्तमान अवस्था में देखें। तब आप इसे भूलने लगते हैं, भूतकाल को भूल जाते हैं। परन्तु अब भी आपका

भविष्य शेष हैं, आप भविष्य के विषय में सोचने लगते हैं। सर्वप्रथम लोग अपने बच्चों, अपनी पत्नियों के विषय में सोचने लगते हैं कि मेरे बच्चों का क्या होगा, मेरी पत्नी का क्या होगा ? तब वे सोचते हैं कि सहजयोग का क्या होगा ? तब महसूस करते हैं कि श्री माता जी का क्या होगा ? लोग ये भी सोचते हैं कि इस विश्व का क्या होगा क्योंकि आपकी जागरूकता अब विस्तृत हो गई है, अब आप एक सीमित क्षेत्र में नहीं रहे। आप अपने बच्चों, अपनी पत्नी और पूरे विश्व की समस्याओं के विषय में भी सोच सकते हैं। तो आप उस स्थिति तक पहुँच चुके हैं। वह कौन सी चीज़ है, अब वह कौन सी चीज़ जो यह सब आच्छादित किए हुए है या आपको आपके बच्चों, परिवार, पत्नी सभी के लिए समाधान प्रदान करती है। **आपकी माँ केवल समस्याएं देने में ही भरोसा नहीं करती वे समाधान देने में विश्वास करती हैं।** आज की समस्याओं का समाधान करने के लिए आपको तलवार की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आजकल की समस्याएं हमारे अन्दर हैं। हम समस्या को देखते हैं, उसके प्रति जागरूक हैं और उसके बारे में कुछ करना चाहते हैं। चाहे हम भूत–भविष्य या वर्तमान में हों, हम समस्या को देखते हैं। तो समाधान क्या है ? हमारे पास कोई हथियार नहीं है, युद्ध करने के लिए कोई हथियार नहीं है, बहुत से लोग तो यह भी नहीं जानते कि हाथ में तलवार कैसे पकड़ी जाती है और बहुत से इतने करुणामय हैं कि वे तलवार पकड़ना भी नहीं चाहते : वे आनन्द के सागर में हैं और भली–भांति आनन्द उठा रहे हैं। वे अपनी, अन्य लोगों की तथा अपनी माँ की करुणा का आनन्द उठा रहे हैं। तो समस्या का समाधान किस प्रकार किया जाए ? समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब अपने अन्दर आप अति शक्तिशाली हो जाएं। आपका चित्त कहाँ है ? आपको अन्तस में जाना होगा। मैंने अपना कार्य कर दिया है, आपको आत्मसाक्षात्कार दे दिया है, आप इतने विकसित हो गए हैं। मैंने आपको सभी कुछ बता दिया है, सभी कुछ वर्णन कर दिया है। इस बार मैंने आपको प्रेम का सागर दे दिया है। परन्तु अब आपको अपना पोषण करना होगा। आपको आंतरिक रूप से शक्तिशाली बनना होगा। तो शक्तिशाली बनने का क्या उपाय है ?

सर्वप्रथम आपको विश्वास करना होगा कि आप अपने मानवीय व्यक्तित्व से ऊपर उठ कर दैवी व्यक्ति बन चुके हैं। यह बात आपके मस्तिष्क में बैठ जानी चाहिए। इसी को हम श्रद्धा कहते हैं। यह श्रद्धा मिथ्या नहीं है, किसी चीज़ में आपका अन्धविश्वास नहीं है। सैकड़ों बार मैंने आपसे कहा है कि आप अपने उत्थान में सहजयोगी के रूप में अपने पद पर विश्वास करें। इसके लिए ध्यान–धारणा अत्यन्त महत्वपूर्ण है, ध्यान–धारणा के बिना आप स्वयं पर पूर्ण विश्वास नहीं कर सकते

क्योंकि केवल इतना पूछने मात्र से कि ' मैं कौन हूँ, आप स्वयं को नहीं जान सकते। आज़मा कर देखें। प्रश्न पूछें ' मैं कौन हूँ, और आप खो जाएंगे। तो विश्वास क्या होना चाहिए ? तो आप एक ऐसी स्थिति पर पहुँचते हैं जहाँ मुझे आपको यह बताना पड़ता है कि विश्वास मानसिक, भावनात्मक या शारीरिक नहीं है परन्तु यह आपकी अपने अस्तित्व की एक अवस्था है जिसे हम रुहानी अवस्था के नाम से पुकारते हैं। रुहानी अवस्था में कोई चीज़ आपको अशान्त नहीं कर सकती। कोई भी चीज़ आपको वश में नहीं कर सकती, आप पर प्रभुत्व नहीं जमा सकती क्योंकि वह स्थिति आपकी है तो इसका अर्थ है कि आप वास्तविकता के अंग–प्रत्यंग हैं। तब आप परमात्मा के साम्राज्य के सम्माननीय सदस्य हैं। तब आप एक देवता, एक गण सम हैं। उस स्थिति में जब आप हैं तो वह स्थिति, मानव की स्थिति से ऊँची है और उस स्थिति में आप अत्यन्त शक्तिशाली होते हैं।

सूफी सन्त निज़ामुद्दीन के विषय में एक कहानी है। उनके समय में एक क्रूर राजा था परन्तु सन्त निज़ामुद्दीन उनके सम्मुख जाकर झुकते न थे। वे कहते थे कि मैं केवल परमात्मा के सामने झुक सकता हूँ किसी अन्य के नहीं। राजा ने कहा कि कल आकर यदि तुमने प्रणाम नहीं किया तो मैं तुम्हारी गर्दन काट दूंगा। उसी रात उस राजा की गर्दन कट गई। निजामुद्दीन साहिब ने उसकी गर्दन नहीं काटी क्योंकि वे तो ऐसा कर ही नहीं सकते थे किसी अन्य ने उसकी गर्दन काट डाली। **इस अवस्था को हम 'श्रद्धा' की स्थिति कहते हैं, ज्योतित श्रद्धा, प्रकाशित विश्वास**। यह एक नए किस्म की रचना (Machanism) है जिसमें आप विराट के अंग–प्रत्यंग बन जाते हैं। पूजा में उपस्थित रहने के लिए मैंने सूर्य को नहीं कहा था। पिछली बार भी मैंने नहीं कहा था। इस बार लोग कह रहे थे कि कहने की कोई आवश्यकता नहीं, सब हो गया है। चैतन्य लहरियों को मैं क्रॉस बनाने या चमत्कारिक फोटो दर्शाने के लिए नहीं कहती। वे यह सब स्वयं करती हैं। मैं कई बार तो हैरान होती हूँ कि उनके कितने सरल तरीके हैं! किस प्रकार से वे सभी कार्य करते हैं। सभी कार्य स्वतः होते हैं। सभी कुछ हो जाता है। मुझ में यदि कुछ है तो वह है पूर्ण विश्वास कि मैं उस स्थिति में हूँ और इसी कारण पूर्ण धैर्य (सबूरी) है और हमें यही सीखना है । हर हाल में यह घटित होना है क्योंकि हम सब उसी स्थिति के हैं। केवल ध्यान– धारणा महत्वपूर्ण है, अत्यन्त महत्वपूर्ण। मेरे लिए नहीं आपके लिए। आप सब यदि प्रतिदिन केवल दस मिनट भी ध्यान–धारणा करें तो यह आपके लिए अत्यन्त सहायक होगी।

अब माँ की, हनुमान की, गणेश और ईसा आदि की इतनी प्रतिमाएं क्यों बनाई जाती हैं ? क्योंकि आरंभ में जब तक साकार रूप न हो लोग

कुछ भी समझ नहीं सकते, देवी–देवताओं के साकार रूप के बिना वे गहनता में नहीं उतर सकते। परन्तु इस ओर भी लोग एक दूसरी सीमा तक चले गए और किसी भी पत्थर को परमात्मा मान कर उपयोग करने लगे। अब आपमें विवेक है। आप जानते हैं कि किसकी पूजा करनी है और किसे उच्च व्यक्तित्व मानना है। परन्तु इससे पूर्व वे सभी प्रकार के लोगों की पूजा किया करते थे। लोग पोप की पूजा करते हैं वे केवल अन्धे ही नहीं हैं, केवल अचेतन ही नहीं हैं उनमें तो इसके प्रति चेतनता का ही अभाव है। वे तो एक ऐसे स्तर पर हैं कि उन्हें समझाया भी नहीं जा सकता। तो आप एक नए किस्म के लोग हैं जिन्होंने इन सब चीज़ों से लड़ने का, इनके विरुद्ध संघर्ष करने का और पूर्ण सत्य का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया है। जब तक आप पूर्ण सत्य को जान नहीं लेते आप कहीं भी नहीं हैं, आपमें न तो विवेक है न सूझ–बूझ और न ही बुद्धिमता। **परन्तु एक बार जब आप पूर्ण सत्य को जान लें तो किसी भी हाल में आपको आधा–अधूरा नहीं रहना है। वह स्थिति अत्यन्त भयानक है जैसेः एक बीज अंकुरित हो गया है, अब वह न तो बीज है और न ही पेड़। यदि यह बढ़ता नहीं है तो यह व्यर्थ है। आपकी चेतनता के साथ भी यही होता है और तब आप न इधर के होते हैं न उधर के।** बहुत से लोग सहजयोग में शांति प्राप्त करने के लिए आते हैं परन्तु मुझे ऐसे पत्र प्राप्त होते हैं जिनमें वे लिखते हैं कि मेरे पिता बीमार हैं, मेरी माँ बीमार है, मेरे भाई बीमार हैं, मेरे पति मुझसे झगड़ते हैं, मैं उनसे तलाक लेना चाह रही हूँ। ऐसे पत्र आते हैं जिनमें लिखा होता है कि मेरा सारा धन चला गया है, मुझे कुछ पैसा मिलना चाहिए और चौथे, मैं महान कलाकार हूँ परन्तु मेरी कला बिक नहीं रही। मैं कहती हूँ "कि 'ये किस प्रकार के सहजयोगी हैं ?"

वास्तविकता से एकाकारिता होने का अर्थ है कि पूर्ण वास्तविकता आपके चरणों में है, यह पूरी की पूरी आपके लिए कार्य करती है। एक बार यदि आप इस स्थिति की झलक भी पा लेते हैं तो आप अपने अन्दर अत्यन्त शांत हो जाते हैं। आप यदि कहें कि मैं राजा हूँ तो आप राजा हैं और यदि कहें कि मैं भिखारी हूँ तो भिखारी हैं। तो वह स्थिति जो शुद्धतम स्वर्ण है जिसे दूषित नहीं किया जा सकता, ऐसी ही मनःस्थिति हमें विकसित करनी है। हमारे लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। हम सहजयोगी हैं, ठीक है, हमने आत्मसाक्षात्कार पर लिया है, ठीक है हम बहुत अच्छा गा सकते हैं, ठीक है, हमने अच्छा पद पा लिया है, ठीक है, हमारा बहुत अच्छा विवाह हो गया है, हमें सभी प्राप्त हो गया है, हमें नौकरी मिल गई है आदि आदि। परन्तु अचानक एक नकारात्मक शक्ति आती है और आपको कष्ट में डाल देती है। तो क्या हुआ ? इसके बिना आप कैसे जानेंगे कि आप क्या हैं ? यदि अन्धकार नहीं

है तो आप कैसे जानेंगे कि आप प्रकाश हैं? आपकी अपनी अवस्था को यह एक चुनौती है कि आप किस अवस्था में हैं। 'अवस्था' शब्द इतना स्पष्ट नहीं है संस्कृत में यह 'स्व–रूप' है 'स्व' अर्थात् आप और 'रूप' अर्थात् शक्ल या स्थिति। वह स्थिति आप सबके लिए सम्भव है यदि आप सभी नकारात्मक विचारों के लिए कहते रहें कि 'यह नहीं, यह नहीं'। आपका मस्तिष्क उस स्थिति में पहुँच चुका है जहाँ मस्तिष्क है ही नहीं। आप यह कर सकते हैं परन्तु इसके लिए आपको ऐसा व्यक्तित्व विकसित करना होगा जो यह महसूस कर सके कि आप क्या हैं। परन्तु उस साक्षात्कार में आप मात्र जागरूक होते हैं इसके प्रति सचेत नहीं होते। जैसे उदाहरण के रूप में मैं आपको बताती हूँ कि मैं जागरूक हूँ कि 'मैं आदिशक्ति हूँ', मैं जागरूक हूँ, मैं यह बात जानती हूँ। परन्तु जब आप जय श्री माता जी कहते हैं तो यह भूल कर कि मैं श्री माता जी हूँ, मैं भी जय श्री माता जी कहती हूँ। वास्तव में यही स्थिति होनी चाहिए।

आप लोग महारानी की तरह से मुझे बिठाते हैं और मुझे तोहफे देते हैं। ठीक है, यह आपका विचार है। परन्तु मैं स्वयं में पूर्ण हूँ, मैं स्वयं में लीन हो गई हूँ, ठीक है, आप ऐसा कर सकते हैं, आप वैसा कर सकते हैं और यदि आप ऐसा न भी करें तो भी ठीक है। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हो सकता है इससे आपको फर्क पड़े। जैसे मैं सदा कहती हूँ कि मुझे बहुत तोहफे न दें लेकिन एक ही तर्क दिया जाता है कि पूरे वर्ष में हम केवल एक बार आपको देते हैं, तो श्री माता जी आप इस पर एतराज न करें, इससे हमें आनन्द मिलता है। ठीक है, यदि आप सोचते हैं कि आपको आनन्द मिलता है तो करें। परन्तु मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि मैं नहीं सोचती कि मैं यहाँ हूँ, यहाँ बैठकर मैं आप सबको देख रही हूँ, ठीक है, सभी आत्मसाक्षात्कारी लोग बैठे हैं, ठीक है परन्तु मैं भी आपमें से एक हूँ। मैं नहीं सोचती कि मैं कोई विशेष हूँ। परन्तु यदि आप मुझसे पूछें तब मैं कहूँगी कि ठीक है मैं आदिशक्ति हूँ, पर मैं नहीं सोचती कि आदिशक्ति भी कुछ विशेष है। यदि कोई व्यक्ति कुछ विशेष भी है तो क्या ? मान लो सूर्य कुछ विशेष है तो क्या ? सूर्य तो सूर्य है। यदि कोई व्यक्ति आदिशक्ति है तो वह आदिशक्ति है, तो क्या ? परन्तु आपके लिए यह श्रेयस्कर है क्योंकि आप लोग जन्मजात आत्मसाक्षात्कारी न थे, आपने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया, अतः आप विशेष हैं, आप महान हैं, आपने कुछ उपलब्धि प्राप्त की है, मैंने तो कुछ प्राप्त नहीं किया, मैं ऐसी ही थी और ऐसी ही रहूँगी चाहे मैं आसुरों से युद्ध करूं या आपके सम्मुख बैठूं, कोई फर्क नहीं पड़ता। परन्तु मेरे लिए आप महान हैं क्योंकि आपने यह प्राप्त किया है। नवरात्रि के दिन इतने लोगों को पूजा के लिए बैठे देखकर बहुत अच्छा लगा। यह अति प्रशंसनीय है।

ये मेरी उपलब्धि नहीं है आपकी अपनी जिज्ञासा है क्योंकि मैं इससे पूर्व भी बहुत बार पृथ्वी पर आई हूँ, परन्तु ऐसा कभी नहीं हुआ। बहुत से लोग आए, सूली पर चढ़ गए, मृत्यु को प्राप्त हुए आदि, कभी मुझे ऐसे लोग नहीं मिले।

तो एक बार फिर हम उसी बिन्दु पर आते हैं कि हमें स्वयं के प्रति जागरूक होना चाहिए, स्वयं में पूर्ण श्रद्धा। यदि आपको स्वयं में श्रद्धा है तो आपको मुझ में भी श्रद्धा होगी क्योंकि हम लोग भिन्न नहीं हैं। यदि को विश्वास है कि यह जल है तो पूरे :- भी जल होगा, आप जान जाएंगे कि यह जल है। आप यदि जानते हैं कि आप सहजयोगी हैं तो जहाँ भी सहजयोगी होगा आप जान जाएंगे कि यह सहजयोगी है। परन्तु जहाँ तक आपका सम्बन्ध है आप भूल जाते हैं कि आप कितने महान हैं! मुझे आप पर बहुत गर्व है। परन्तु मैं एक नम्र व्यक्ति हूँ , मैं नहीं जानती कि किस प्रकार प्रदर्शन करूं। इतने अच्छे और प्यारे बच्चे होना। जिन भक्तों के लिए उसने (देवी ने) इतने असुरों का वध किया था, वे आप जैसे न थे। आप उनसे कहीं अच्छे हैं, कहीं ऊँचे हैं, आपमें उनसे कहीं महान गुण हैं।

आपको यह जानना आवश्यक है कि आप क्या हैं, आदिम (अविकसित) स्वभाव के लोगों की तरह से व्यवहार न करें। आप विकसित हो चुके हैं, समृद्ध हो चुके हैं, अब आप इसके फल भी देख सकते हैं। वास्तव में मेरी समझ में नहीं आता कि मैं आपके लिए क्या करूं। परन्तु स्वयं में विश्वास करें, आप देखेंगे कि आपको वास्तविकता (सच्चाई) में कितना विश्वास हो जाता है, हर कदम पर, हर क्षण आप देखेंगे कि आपके अन्तस में कितनी सच्चाई है। कोई भय या उपलब्धि –गर्व मन में न आने दें, काफी हो चुका है, हो गया। जब पाँच सहजयोगी थे, मैं प्रसन्न थी, अब जब इतने सारे सहजयोगी हैं, मैं प्रसन्न हूँ। परन्तु जब मैं इतने अधिक सहजयोगियों को देखती हूँ तो मुझे लगता है कि इतने सारे शक्तिशाली व्यक्तित्व हैं जिनकी एकाकारिता वास्तविकता से है। यह सामूहिक एकता इससे पूर्व कभी न थी। इसीलिए **मैं कहती हूँ कि आज के दिन हमारे करने योग्य एक ही कार्य है कि हम अपने अन्तर्निहित असुरों का वध करें, बस। आप यदि वास्तव में मेरी पूजा करना चाहते हैं तो आपको यही सोचना होगा कि आपके अन्दर कौन से असुर हैं। मात्र इतना ही। आपको बाहर के असुरों की चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं, वे आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।**

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री माता जी ने अन्तर्राष्ट्रीय 'ले प्लेजादे' (Le Plejade) शांति पुरस्कार जीता

2 मई 1996 को अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार ले प्लेजादा के दसवें संस्करण में श्री माता जी निर्मला देवी को 1996 का पुरस्कार विजेता घोषित किया गया। निर्णायकों में भिन्न देशों के प्रोफैसर तथा डाक्टर सम्मिलित थे। पुरस्कार को मंत्री परिषद की अध्यक्षता, यूरोपियन संसद कार्यालय इटली, अच्छे जीवन के लिए योजना संस्थान एवं यूनीपाज़ (दोनों संयुक्त राष्ट्र से सम्बन्धित) ब्रह्माण्डीय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था, कला प्रगति संस्थान (The Presidency of Council of Ministers, The European Parliament Office in Italy, The Planning Institute for Quality of Life and Unipaz) ने 3 एम इटली समूह (3 M Italy Group) के सहयोग से संरक्षण प्रदान किया।

श्री माता जी को इस पुरस्कार के लिए चुनने के लिए उन्होंने निम्नलिखित आधार बताए हैं :–

विश्व में जहाँ कि व्यक्ति तथा मानवता की समस्याओं के नए समाधान खोजने की अत्यन्त आवश्यकता है, किसी ऐसी चीज़ को खोजने की जिससे व्यक्ति अस्तित्व की चेतना की गहनता में उतर सके, इस क्षेत्र में सहजयोग संस्थापिका श्री माता जी सभाओं तथा नेतृत्व द्वारा हमारे अपने ही गहन आयामों पर ध्यान करने के लिए हमारा पथ–प्रदर्शन करते हुए हमें नयी दिशायें सुझा रही हैं और एक संतुलित तथा शांत समाज, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति की गहन आत्मा से आरंभ करके शांति का वास्तवीकरण किया जा सके, का आधार स्थापित करने में सहायता कर रही हैं।

श्री माता जी की ओर से ग्वीडो ने पुरस्कार प्राप्त किया। संक्षिप्त रूप से धन्यवाद करते हुए उन्होंने अत्यन्त स्नेह तथा सम्मानपूर्वक कहा कि श्री माता जी के प्रति समर्पित होना हमारा अपना ही सम्मान है।